६. प्रथमेश पत्रों में

प्रथमेश पत्रों में

पूज्य प्रथमेशजी ने सैकड़ों पत्रों के द्वारा वैष्णवों को मार्गदर्शन दिया है। कतिपय पत्रों के अंश यहां प्रस्तुत हैं। यह तो विशाल पत्रराशि का छोटा सा अंश मात्र है। सैकड़ों पत्र अभी भी अप्रकाशित हैं। संकलित पत्रों में प्रथमेशजी का क्रांतिकारी और निर्भीक व्यक्तित्व तथा प्रेरक मार्गदर्शन उपलब्ध होता है। ये पत्र पठनीय और मननीय हैं।

— संपादक

शरीर का दंड भी सौभाग्य

"आप का भावना भरा पत्र प्राप्त हुआ । आपके सौहार्द के हेतु कृतज्ञ हूँ । शरीर के दंड यदि प्रभु कृपा कर हमें प्रदान करें तो यह हमारे लिये तो सौभाग्य का विषय है । बालक जब खेलता है तो किसी खिलौने को बीमार भी बनाता है और अच्छा भी करता है, इसमें खिलौने को क्या सुख-दुख । यह तो प्रियतम का पावन स्मरण है ।"

श्री हरिनारायण नीमा, उज्जैन, १८-१-१९६९

ट्रस्ट और आचार्यों के परम्परागत अधिकार

"परम्परागत अधिकारों को भी सुरक्षित रखा जावे, जिससे आचार्य गद्दी पर जो भी हो उसे उचित सेवा का अवसर चिंता, मुक्त हो कर मिले। ट्रस्टियों का निर्वाचन परिषद् द्वारा होना चाहिये ।"

वैष्णव के दोष न देखें

"वैष्णव के दोष हमें नहीं देखने हैं, जो कुछ भगवान् करता है वह हमारे बोध के लिये करता है । मैं यह चाहता हूँ कि आप मेरे द्वारा पुष्टिमार्ग का यथार्थ रूप समझलें । ऐसा कोई काम नहीं करना है जिससे हमारे मन में मलिनता आवे । यही भगवद् धर्म की भावना का प्रथम सोपान है । "

स्थानीय शाखाएं और राज्यस्तरीय संगठन

"सभी स्थानों पर परिषद् की शाखाएं स्थापित हों और राजस्थान का एक संगठन हो यह सर्वथा अपेक्षित है । प्रभु सभी पूर्ण करेंगे ।"

वैष्णवता और स्वधर्म-प्रचार

"आज वैष्णवता कहाँ है ? केवल निंदा-स्तुति, राग-द्वेष आदि है । सेवा की भावना, प्रभु सुख का विचार कौन करता है, किन्तु गुरुवाणी को व्यवहार की दृष्टि से समझने का ही प्रतिफल पूर्णरूप से प्रभु ने आपको समझाया, इसे कृपा मानें । स्वधर्म के प्रचार की योजना बनाना ही श्रेयस्कर है ।"

"प्रसाद को रोजी रोटी समझने वाले और सेवा की कीमत पर प्रसाद खरीदने का यही धार्मिक दृष्टि विन्दु होता है ।"

श्री मदनदास मोहता, कोटा २१-४-६९

धर्म बचाने की बात कहाँ

"अंहकार विमूढात्मा कर्त्ताहं इति मन्यते" इस वाक्य का कोई भी सत्संगी हृदय से मनन नहीं करता । पद लोलुप होते हैं तो क्या हुवा, न यह सत्संग वालो में वुद्धि आई। पैसा बचाने की तो बात सभी सोचते हैं धर्म बचाने की बात कहाँ हैं ?"

श्री मदनदास मोहता, कोटा २१-४-६६

रक्त की अंतिम बिन्दु भी आचार्य चरणों को ही समर्पित

"मेरे रक्त की अंतिम बिन्दु भी आचार्य चरणों को ही समर्पित है, चाहे लोग मुझे किसी भी रूप में समझें । यह मेरा हार्दिक अनुरोध है, संगठन को यथाशक्ति प्रबल बनावें। यह देखें कि सच्ची निष्ठा से कौन काम करने को तैयार है ।"

श्री मदनदास मोहता, कोटा २६-७-१६७८

आचार्य के निर्देश का ही पालन करें

"श्री ठाकुरजी प्रसन्नता में बिराजे और मार्ग की प्रणालिका के अनुसार यही शुभ भावना है । आचार्य संस्था या पीठ कोई भगवदाश्रित होते हुए भी देवालयाश्रित नहीं है अतः शास्त्र विचार के अनन्तर ही कार्य होगा । साथ ही पुष्टिमार्ग की रक्षा यह सर्वोपरि है । उचित तो यह है कि आप सभी शिष्य आचार्य के निर्देश का ही पालन करें ।"

श्री मदनदास मोहता, कोटा, ४-८-१६७६

संगठन के प्रति जागरुकता

"यदि भविष्य में हम कार्य-विभाजन की प्रणाली भी इस प्रकार से अपनायें और आने वाले कार्यकर्ताओं से अपना मधुर व्यवहार से कार्य हो तो संस्था की संगठन शक्ति और कार्यशक्ति बढ़ सकती है । भविष्य के लिये हमें अपने संगठन के प्रति जागरुक रहना है और उसे सशक्त बनाना है ।"

श्री मदनदास मोहता, कोटा १-५-१६८४

प्रचार, विद्वान् और साहित्य

"प्रचार का अभाव लग रहा है । आप परिषद् के द्वारा विद्वानों से यह कार्य करा सकते हैं । यदि सत्य निष्ठा से प्रचार करना है तो परिचयात्मक साहित्य तैयार करावें ।"

श्री मदनदास मोहता, कोटा - १ अगस्त १६८६

परिषद् की उपयोगिता

"परिषद् की उपयोगिता तो बहुत है और थी, किन्तु संगठन और सतत कार्यक्रम का अभाव है । वैष्णव समाज आपसी आलोचना में लगा है तब इससे संस्था क्या करेगी? अपने धर्म के अनेक मंडल और मंडलेश्वर तथा सत्संग मंडल और मित्र-मंडल आदि इस बात को समझने का प्रयास करें तब सफलता मिलेगी ।"

६ नवम्बर १६८८

आचार्यों के अधिकारों पर आघात

"आचार्यों के अधिकारों पर भी आघात आयगा और वह आपको जो वैष्णव हैं उनको कभी अखरेगा नहीं क्योंकि आज का समाज उनको कैसा क्या दिखता है इसका अनुभव मुझे है ।"

श्री मदनदास मोहता, ६ नवम्बर १६८८

विरोध के बीच कार्य दृढ़ता का प्रतीक

"विरोध के बीच में ही कार्य कर जाना दृढ़ता का प्रतीक होता है । हमको राजस्थान को खड़ा करना होगा, हमारी क्षेत्रीय भूमि है । इससे अन्य भी प्रेरणा लेगें ।"

श्री मदनदास मोहता, २८-११-१६८८

परिषद् किसी आचार्य का विरोध कदापि नहीं करती

"परिषद् तो किसी भी आचार्य का विरोध करने की स्वप्न में भी नहीं सोच सकती। हमारा लक्ष्य संगठन करना है अतः विरोध मिटाना हमारा कार्य है । इस स्थिति के लिये, 'त्रिदुःख सहनं धैर्यम् आमृते सर्वतः सदा' श्रीमद् वल्लभाचार्य के इस वाक्य का हमें सदा स्मरण रखना है ।"

श्री मदनदास मोहता, कोटा ७ दिसम्बर १६८८

धर्म के साथ खिलावाड़ पसन्द नहीं

"अब शिथिलता सहन नहीं होगी । धर्म के साथ खिलवाड़ करना हम पसंद नहीं करते किन्तु तथाकथित धार्मिक हमेशा ऐसा करते हैं ।"

श्री मदनदास मोहता, कोटा २२-६-७७

धर्म-निर्वाह भगवान् की कृपा बिना नहीं

''कोटा में स्वधर्म प्रचार पर ध्यान दें । शाखाएं जीवित रहे एवं सुखे नहीं यह ध्यान रखें । वर्तमान समय कठिन है और उसमें धर्म निर्वाह तो भगवान की कृपा बिना नहीं हो सकता ।''

श्री मदनदास मोहता, कोटा २७ जनवरी १९८०

सिद्धान्त-ज्ञान से ही प्रचार-प्रसार

''वैष्णवता का प्रचार और ग्रन्थ के प्रवचन होने पर सिद्धान्त का ज्ञान होगा तभी जनता में प्रचार-प्रसार होगा ।''

श्री मदनदास मोहता, कोटा ५ मार्च ८०

परिषद् अधिवेशन धर्म प्रचार की दृष्टि से ही

''परिषद् का अधिवेशन धर्म-प्रचार की दृष्टि से होना उचित है, जिससे श्रीमद् वल्लभाचार्य के सिद्धांतों को लोग समझें ।''

श्री मदनदास मोहता, कोटा ६ मई ८०

सेवा धर्म सर्वोपरि

''प्रभु ने आपको श्रीहरि, गुरु, वैष्णव तीनों की सेवा का सौभाग्य प्रदान किया है। अतः निरभिमान होकर सेवा समझ कर कार्य करें । सम्प्रदाय की स्थिति शोचनीय है और हमारा समाज सुषुप्त है । सेवाधर्म सर्वोपरि है यही समझ कर मार्ग तथा श्रीजी की सेवा वैष्णव और गुरुदेव के सन्मुख रहकर करें । भावना दूषित कभी न हो इसका विवेक रखें।''

श्री मदनदास मोहता, कोटा २४ फरवरी ८०

वैष्णव समाज में अभी प्रबल जाग्रति नहीं

''वैष्णव समाज में भी प्रवल जाग्रति आई नहीं है । अभी तो खाना, गाना, नहाना ही जानते हैं या इतना भी नहीं जानते ।''

श्री मदनदास मोहता, कोटा ६ दिसम्बर ८१

आज तो धर्म धंधा है

"पुष्टिमार्ग तो अब संगठन के अभाव में डूब रहा है । मेरी बात को आजतक सुना ही नहीं गया और भविष्य में भी आशा नहीं है । परिषद् क्या करती है यह वैष्णवों को अपने आप से पूछना चाहिये । क्या बताऊँ आप स्वयं जानकार हैं किन्तु यह धर्म का दिखावा है । सही दिशा में यह सभी खत्म हो रहा है । मंदिरों और मठों की भी यही हालत होगी । फिर भी चेष्टा करना अपना काम है । हिम्मत हारना नहीं चाहिये और हमें धर्म संगठन के हेतु व्यक्ति रखना चाहिये । आज तो धर्म, धंधा है ।"

१ दिसम्बर १६८१

वैष्णव का त्याग और त्यागपत्र अनुचित

"वैष्णव का त्याग एवं त्याग-पत्र दोनों ही अनुचित है । सम्प्रदाय का अध्ययन करे। आप को सेवा का अवसर मिला है जिसकी महानता और पवित्रता का आपको ध्यान करना चाहिये ।"

श्री मदनदास मोहता, कोटा २६ मार्च १६८५

अस्वस्थता में भी प्रभु का कृपामय संकेत

"मुझे तो मेरी अस्वस्थता में भी प्रभु का कृपामय संकेत दृष्टिगत होता है । इस प्रकार प्रभु जीव को विप्रयोग ही भावना का दान करके निग्रह कराते हैं । अब तो 'यस्य वा भगवत्कार्यम् पक्ष स्पष्टं न द्रष्यते' की भावना ही चित्त में है ।"

श्री कन्हैयालाल खंडेलवाल, मनोहरथाना ५-३-६६

वैष्णवों द्वारा निन्दा में भी अहोभाग्य

"आज तो हमारे धर्म की स्थिति ही विचित्र है, कहीं भी कार्यकर्ता प्राप्त नहीं है । वैष्णवों द्वारा मेरी निन्दा करना, मैं अपना अहो भाग्य मानता हूँ । प्रभु इससे मेरी क्षति या अवरोध का निवारण ही करावेगें ।"

श्री कन्हैयालाल खंडेलवाल, मनोहरथाना २४-२-७०

जीवन की कृतार्थता

"प्रभु जब हमारी परीक्षा करें और हम उनके अनुग्रह से उसमें उत्तीर्ण हों तभी हमारे जीवन की कृतार्थता है । मेरी बहन अपने सफल जीवन को भगवदार्पित कर गई है और मुझे प्रेरणा दे गई । इसमें प्रभु की लीला ही बलवान् है । मानव का सामर्थ्य तो नगण्य है ।"

श्री हरिनारायणजी नीमा १८-१-७३

पी. एच. डी. के विषय - चयन हेतु मार्ग दर्शन

"आप एम. ए. के पश्चात् पी. एच. डी. करना चाहते हैं । इसमें शोध प्रबंध लिखने का विषय गवेषणा पूर्ण होना तो आवश्यक है किन्तु विद्यानगर के विषय में आप क्या लिखना चाहते हैं यह सूचित करें । विद्यानगर एवं विजयनगर एक नहीं है । यह श्री तेलीवाला आदि की शोध में त्रुटि है । विद्यानगर हम्पी के पास है तथा उसके ध्वंसावशेष आज भी विद्यमान है । यदि आपको दूसरे विषय पर भी लिखना हो तो उसके विषय में भी पूर्व विवेचन आवश्यक है तभी परामर्श देना सम्भव है । यदि शास्त्रार्थ का विषय लेगें तो आपको शास्त्रीय विवेचन करना होगा । उसके विषय में शंकर, रामानुज, माध्व आदि से श्री वल्लभाचार्य के मत का तारतम्य प्रस्तुत करना होगा । जिसमें निम्बार्क भी विवेचनीय है । तथा आपका दूसरा विषय (जन जीवन पर प्रभाव) सामाजिक है तथा उसका व्यापक प्रभाव सुधारवाद आदि इसमें सम्मिलित है ।"

'मुझे खेद है कि अभी तक ऐसा साम्प्रदायिक पूर्ण पुस्तकालय कोई नहीं है । जिससे सभी वस्तु प्राप्त हो । कांकरोली विद्या विभाग भी दर्शनीय है ।'

आप अपनी सामर्थ्य के अनुकूल विषय का चयन करें । जिससे उचित सम्मति व्यक्त करूं । साथ ही विषय अति लम्बा भी न हो और न ही सूक्ष्म हो । दोनों पर ध्यान रखें ।"

श्री हरिनारायण नीमा, उज्जैन २६-७-७३

परिषद् की उन्नति में बाधक

"आज तक परिषद् की उन्नति में आचार्य बालक ही राग-द्वेष और मात्सर्य दोष से बाधक हुए हैं। इसे उन्होंने बुद्धिमानी समझी और यहीं आनाचारी बुद्धि उनका भी मूलोच्छेद करेगी ।"

अध्यक्ष, अ. भा. पु. वै. परिषद् २२-६-१९७८

अध्यक्ष कैसा हो ?

"वह दिन पुष्टिमार्ग का सौभाग्य दिवस होगा जब संस्था एवं सम्प्रदाय को ऐसा अध्यक्ष प्राप्त होगा जो सम्प्रदाय एवं संस्था के हित में निःसंकोच होकर निर्णय ले सकें । यही दृष्टि आज मार्ग के लिये हितकारक है । इसी से ही श्री वल्लभवंश, गुरु-परम्परा सुशोभित कर सकता है ।"

अध्यक्ष अ. भा. पु. वै. परिषद् ७-८-७६

स्वधर्म और संस्था दो नहीं

''अबलौं नसानी अब न नसैं हों, तुलसीदास की इस उक्ति का स्मरण करें, मैं उन गैर जिम्मेदार आदमियों में से नहीं हूँ जो संस्था के पद से हटने के पश्चात् मुक्त हो जाते हैं, मेरा तो जो स्वधर्म है, वही संस्था भी है , इसे एवं धर्म को दो नहीं समझा ।''

श्री कुमनदासजी झालानी २५-७-७६

आज धर्म गौण, प्रपंच ही प्रधान

''सभी के लिये धर्म गौण है । प्रपंच ही प्रधान रह गया है । प्रभु-स्मरण का भी लेशमात्र फल उनको स्पर्श नहीं कर सका । श्रीमहाप्रभु क्या करना चाहते हैं यह तो वे ही जानें । कैसी दयनीय स्थिति है यह जीवन की । भक्ति का प्रभाव दिखाई नहीं दे रहा और न प्रभु पर ही पूरा भरोसा है केवल लौकिक आसक्ति ही प्रधान हो गई है । क्या कभी भी - वैष्णवजन वास्तविकता को नहीं समझेगें और ऐसा ही विखराव रहेगा क्या ? यह आशंका ही रहती है । स्वधर्म विमुखता की कोई सीमा नहीं है । लगता है किसी भी उपदेश का अन्तःस्थल में स्पर्श नहीं है । न मंत्र शक्ति का ही प्रभाव हुआ है अन्यथा तो कुछ निःस्वार्थ शरण भाव आता । श्रवण भक्ति भी सिद्ध न हुई । और क्या लिखें।''

श्री कुमनदास झालानी, प्रधान मंत्री अ. रा. पु. वै. परिषद् २०-११-१९७९

परिषद् का कार्य धर्म-कार्य

''मैंने कभी किसी से कुछ आशा अपने जीवन में नहीं रखी । और आज भी अपेक्षा नहीं है । परिषद् में आज तक जो कुछ किया था वह मेरा धर्म था । और यह कभी एहसान की भावना नहीं है । न मेरा मिथ्या अनुरोध है । राह में मिलते एवं बिछड़ते अनेक है तिनकें भी बिखर जाते हैं । इसमें हर्ष, शोक दोनों ही नहीं होता फिर और क्या विचार करूँ 'निजेच्छातः करिण्यति' वाली बात है । मुझे लाचार होकर कुछ भी स्वीकार करने योग्य नहीं है ।''

श्री कुमनदास झालानी, प्रधान मंत्री ११-७-१९७९

व्यक्तित्व की कीमत पर भी सम्प्रदाय की सेवा

''किन्तु कैसी है यह विचित्र श्रद्धा जिससे हम आत्म हत्या ही नहीं, स्वधर्म हत्या तक चले गये, और हमको तनिक भी आभास नहीं हो रहा है । यह मेरा सर्वथा उचित ही निवेदन है कि अब मुझे मूक सेवक का कार्य दिया जाय । यही सर्वोत्तम है । प्रतिष्ठा और जीवन से अधिक खिलवाड़ आपको ही महंगा पड़ेगा यह ध्रुव सत्य है. आज तक का मेरा अनुभव यही है कि अब आपने जीवन के उत्तरकाल में अपने आपको ठीक करूं । सभी तो विखर रहा है । कहाँ तक रोकूं, जीव की भी एक सामर्थ्य है । मेरे हटने का अर्थ यह नहीं कि परिषद् डूब जाएगी । मेरे व्यक्तित्व की कीमत पर भी सम्प्रदाय की सेवा कर रहा हूँ और करता रहूँगा ।''

प्रधानमंत्रीजी, अ. भा. पु. वै. परिषद् २९-४-८०

आचार्यों की गरिमा परिषद् द्वारा सुरक्षित की जाय

"यह उचित है कि आप **परिषद् में एक स्थायी मंदिर प्रबंधसमिति का गठन करें** जिससे मेरे द्वारा किए गए न्यास मेरी श्रद्धानुसार सम्प्रदाय के प्रचार केन्द्र बनें । और भविष्य में वहाँ आचार्य मर्यादा सुरक्षित रहे । यह अनिवार्य है कि आचार्यों की गरिमा परिषद् द्वारा सुरक्षित की जाय । भविष्य में आचार्य अपनी मर्यादा स्वयं नहीं रख सकेंगे, क्योंकि यह जनतंत्र का युग है ।

हमें यह ध्यान रखना है कि आचार्य केवल आचार्य है, गुलाम नहीं है । तभी उसके गौरव की रक्षा होगी और विद्वान् आचार्य बनाए जा सकेंगे । यह प्रश्न उलझाने या विलम्ब करने से हल नहीं होगा ।"

प्रधान मंत्रीजी

अ. भा. पु. वै. परिषद्

३-५-१९८०

क्या महाप्रभुजी के सच्चे सेवक नहीं रहे ?

"एक गहरी निराशा एवं विनाश की आशंका से सर्वप्रकार से ग्रस्त हो चुका हूं । किसी को सलाह देने की स्थिति में नहीं हूं । लगता है कि अव्यवस्थित अविचारित षड्यंत्र चल रहा है जो संप्रदाय और उसके आचार्यों को समाप्त कर देगा । क्या सच्चे श्री महाप्रभु के सेवक कहीं भी नहीं रहे ? यह विचार मुझे खाए जा रहा है । अब जीवन जीने की भी इच्छा नहीं रही । जी रहा हूँ सभी कुछ निष्पन्द है । अब अधिक सहन शक्ति प्रभु ने मुझमें नहीं रखी है । यह उनकी लीला है । क्या करना चाहेंगे कौन जानता है । मैं तो सेवक के रूप में यही प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु मुझे सामर्थ्य दो कि मैं आचार्यश्री के सिद्धान्त की अन्तिम क्षण तक सेवा करूँ या फिर यह जीवन आप की शरण में आजाय। अन्य उपाय शेष नहीं है ।"

प्रधान मंत्रीजी

अ. भा. पु. वै. परिषद्

९-८-८०

आचार्यश्री के चरणों का आश्रय लेकर आराधना करें

"अब इस मार्ग में कार्य करने का कोई भी परिणाम नहीं निकलेगा । फिर भी प्रयत्न मात्र करना है तो निष्ठावान् कार्यकर्ताओं को रखकर द्रव्यादि का प्रबंध करके कुछ कार्य सम्भव है । लोग जैसे घर का ध्यान रखते हैं ऐसे धर्म का ध्यान नहीं करते । अतः जो प्रभु की इच्छा से यह मार्ग टिकाना है तो संस्था की स्थिति के लिए आचार्यश्री के चरणों का आश्रय लेकर हमें आराधना करनी चाहिये । भक्तों के द्वारा भगवद्‌बल प्राप्त हो तभी इसका मूल रूप हमारे सामने साकार हो सकता है । मन में अब एकांत सेवन की इच्छा प्रबल है ।"

प्रधान मंत्रीजी

१६-६-८० अ. भा. पु. वै. परिषद्

केन्द्र के सशक्त हुए बिना काम नहीं होगा

"संस्था का काम सेवा और परमार्थ मानकर कोई भी नहीं करना चाहता और सभी उदासीन हैं । केन्द्र के सशक्त हुए बिना काम नहीं होगा । आज तक जैसी तुच्छ सेवा बनी वह कर्तव्य समझ कर की किन्तु आहिताग्नि होने से अब अधिक दौड़ धूप नहीं कर सकता । परिषद् के समर्थक सभी बालकों से यह वक्तव्य किसी भी प्रकार निकलवाना चाहिए कि सभी वैष्णव समय की गति को देखते हुए संस्था को सशक्त बनायें ।

जीवन जिस संस्था को स्वधर्म सेवार्थ दिया है उससे विमुख तो होने का प्रश्न ही नहीं है। फिर भी मानसिक एवं शारीरिक दौर्बल्य तो है ही । कृपया केन्द्र को ही सशक्त बनावें । बम्बई एवं कलकत्ता तथा मद्रास को केन्द्र के ही अधिकार में तदर्थ समिति द्वारा रखना उचित है । जिससे हमें संबल मिले ।"

प्रधान मंत्रीजी

६-७-८० अ. भा. पु. वै. परिषद्

निष्ठावान् लोगों से परिषद् चलावें

"मेरे विचार से थोड़े से निष्ठावान लोगों से परिषद् चलानी चाहिये । स्थान-स्थान पर क्षेत्रीय सम्मेलन से सहायता बढ़ाकर वाद में संगठन में सेवा भावी मानदेय देकर व्यक्ति रखना ही उचित है, फिर आपकी इच्छा ।"

प्रधानमंत्रीजी

अ. भा. पु. वै. परिषद्

२२ जून ८१

परिषद् सम्प्रदाय की अनिवार्य आवश्यकता है

"परिषद् सम्प्रदाय की अनिवार्य आवश्यकता है यह वैष्णव समाज वैष्णव के ही द्वारा समझेगा । आचार्य बालकों की स्थिति अच्छी नहीं है और इनका वैमनस्य इनको खा जायागा । मंदिरों की व्यवस्था में परिषद् का प्रतिनिधित्व होना आवश्यक है । इसी से आचार्यों के अधिकार और परम्परा की रक्षा होगी । राजस्थान में मनमानी चल रही है और देवस्थान के मंदिरो में सेवा नहीं हो रही है । अब बिना संगठन के निधि स्वरुपों की रक्षा भी सम्भव नहीं है । उदयपुर में तो ऐसे लगता है कि निकट भविष्य में स्वरूप एन्टिक बना दिये जावेंगे । यह प्रश्न विचारणीय है ।

अशिक्षित धर्माचार्य अथवा भीरुता वाले अब आत्म साहस से आगे आवें ऐसा प्रयास किया जाना चाहिए । आज किसी की लगन नहीं देखी जाती है । कार्यकर्ता हमने तैयार नहीं किये और संस्था पर संस्था या मंदिर स्थापित तो होते जा रहे हैं । स्वार्थ टकराता है और धर्म का बहाना है । कुछ गहन विचार करना होंगे और कदम भी उठाना होगा । आज वैष्णव स्वयं संगठन नहीं कर रहे और आचार्यों को आगे करना चाहते हैं । यह हार की निशानी है ।

श्री वल्लभाचार्य के राजसभा प्रवेश से पहले कुमण्डलु विद्यानगर की राज सभा में गया था । विवाद में भी प्रथम पंक्ति पंडितों की थी । यह विष्णुदास छीपा के प्रसंग में स्पष्ट होता है । मेरा इस विषय का सुझाव अनुचित नहीं किन्तु परिषद् की परम्परा के अनुकूल सम्प्रदाय सम्मत है । **परिषद् को कोटा टेम्पल बोर्ड में भी प्रतिनिधित्व मांगना चाहिए और कार्यवाही करनी चाहिए** । यह काम सरल है और बाद में सभी सरल हो जायगा ।

किशनगढ़, बूंदी और उदयपुर में निधि-स्वरुप बिराजते हैं । साथ ही आज आक्रमण भी सम्प्रदाय पर है । समझ नहीं रहे, यह दुर्भाग्य है । जितने भी न्यास, परिषद् के अधीन हैं उनके कागजात केन्द्रीय कार्यालय में होने चाहिए तभी एकवाक्यता आवेगी ।"

श्री कुमनदास झालानी

८-१२-८१

बुलेटिनों का केन्द्रीकरण हो

"हमारे प्रकाशनजो बुलेटिनो के हो रहे हैं उनका केन्द्रीयकरण होना चाहिए । यहीं से इंग्लिश या हिन्दी में प्रकाशन हो तो सुविधा रहेगी ।

शाखाओं में आचार्य बालकों या वैष्णवों में खींचतान रहती है । इससे काम नहीं होता और समय शक्ति तथा प्रतिष्ठा की हानि ही हो रही है ।"

महामंत्रीजी

अ भा. पु. वै. परिषद्

११-१२-८१

केन्द्रीयकरण आवश्यक

"सम्प्रदाय का विनाश करने में सभी की स्वार्थ सिद्धि के कारण रुचि है और सम्प्रदाय के संगठन में रुचि नहीं है । किसी को कहना अपराध है । अब आपको कितना निवेदन करें ।

मेरा विचार यह है कि परिषद् में कार्यकर्ताओं की कमी है । साथ ही संप्रदाय की बदनामी से जनता पर बुरा प्रभाव पड़ता है । संप्रदाय का प्रकाशन भी व्यवस्थित हर भाषा में होना चाहिए । सब कुछ बनावटी लगता है । एक स्थान पर केन्द्रीकरण हो तो अच्छा है । फिर आप जाने । शाखाओं को सक्रिय रखने में कोई कार्यक्रम देना चाहिए । साथ ही अपनी ओर से प्रतिनिधि जाकर उनमें जागृति करें । तथा केन्द्र में आजीवन सदस्य अन्य प्रकार से अर्थ संचय हो यह आवश्यक है । सभी स्थानों में रुपया आने पर विकृति आती है ।"

महामंत्रीजी

अ. भा. पु. वै. परिषद्

३१-१२-८१

आवाज-ए-खल्क की नक्कार-ए-खुदा समझो

"अब परिषद् के चलने की आशा भी क्षीण हो रही है । संस्था तो मरेगी और ये आचार्य रहेंगे जिनसे सम्प्रदाय को बदनामी के अलावा कुछ भी नहीं मिल रहा है । कुछ कारण है जिससे सत्य बात सामने नहीं आ रही है ।

सभी का मत और रवैया अलग-अलग है । विचार विनिमय और बात है, और जानकर प्रतिष्ठा खोदेना यह समझ से परे है । सम्प्रदाय की स्थिति अब अधिक समय टिक नहीं सकती है । आवाज ए खल्क की नक्कार ए खुदा समझो, और अब तो सामर्थ्य भी नहीं जैसी है ।

जहाँ सभी अलगाव से आत्महत्या करने का यत्न करें वहाँ किस प्रकार अनर्थ रोका जायगा ।

भगवदाश्रय एवं श्री महाप्रभु के प्रताप, परिश्रम पर ही आस्था रखें नहीं तो राजनीति और केवल भौतिक दृष्टि धार्मिक संगठन को टिका नहीं सकती । अतः आप सरकूलर द्वारा शाखाओं को निर्देशित करें ।"

महामंत्रीजी

अ. भा. पु वै. परिषद्

३ मार्च १९८२

परिषद् की उन्नति से सम्प्रदाय आगे आएगा

"सभी लोग रुपयों पर आसक्त हैं, धर्म पर नहीं, इसलिए केन्द्र को तो ग्रौग्रास भी नहीं मिलता । इसलिए व्यवस्थित काम नहीं हो पाता । अस्तु । कार्यकर्ताओं को रखना भी आवश्यक है और यह भी सोचकर करना है । जैसे निरन्तर भगवत्स्मरण होना ही चाहिए ऐसे ही परिषृद की उन्नति की लगन से सम्प्रदाय आगे आएगा । आज यही समाधान और विकल्प है । हमारा सबसे पहला कदम 'श्री वल्लभाचार्य भवन' चाहे वह छोटा ही हो सभी क्षेत्रों में होना चाहिए जिससे कार्य संचालन हो सके । एक मेटाडोर के साथ साहित्य हो तो सभी को सम्भाला जा सकता है ।

प्रचार-प्रसार के साथ ही कार्यालय की एक व्यवस्था हो तो यह सभी देश में वैष्णवता की जाग्रति ला सकता है । विदेश में भी व्यवस्था प्रचार हो सकता है । यहाँ से उत्तर यथार्थ नहीं मिलते और प्रचारक न जाने से शिथिलता आती है हमें कार्यकर्त्ताओं का निर्माण करके उनको काम देना ठीक है जिससे धर्माचार्यों के धर्म प्रचार का ग्राउण्ड बनाया जा सकता है । उनका आर्थिक पिछड़ापन बालकों के मन में भय इसलिए पैदा करता है कि उनका विश्वास वंदनीय महाप्रभु की वाणी से हट गया है । परिषद् को एक एक मंदिर बालकों को देकर उनको शिक्षित करके आगे बढ़ाना चाहिये ।

मुझसे जो होगा उतना घूमकर प्रचार कर रहा हूं और करने की चेष्टा करूंगा । यह आशा करनी व्यर्थ है कि आपको कष्ट तो दे रहा हूँ किन्तु कर्तव्यवश लिखकर सूचित करना पड़ता है ।"

अध्यक्ष

अ. भा. पु. वै. परिषद्

१३-१२-१९८१

धर्म के प्रति लगन और आस्था न हो तो सब व्यर्थ

"इस पत्र के द्वारा दुःख से सूचित करता हूं कि आज सम्प्रदाय को महान सेवा की आवश्यकता है । कोई भी दायित्व का वहन नहीं करता, न अनुभव करता है । अव्यवस्था के कारण हानि भी होती है । अधिक क्या कहूं । यदि हममें धर्म के प्रति लगन और आस्था ही नहीं तो क्या हो सकता है ।

आप सभी वैष्णव हैं सोच सके तो कर्तव्य का विचार करें । भगवान् सभी को सन्तुष्टि और सेवा भावना प्रदान करें । सुज्ञेषु किम् बहुना ।"

महामंत्रीजी

अ. रा. पु वै. परिषद्

२२-७-१९८२

हाँ में हाँ करने वाले वैष्णव न हों

"संस्था को दृढ़ बनाना चाहिए जिसपर सम्प्रदाय का भावी निर्भर है । सात स्वरूप आचार्यों के आवास का स्थान था, जिसे आचार्य बालकों के रहने के लिए काम में लिया जाता था ।

बम्बई में अध्ययन के लिए पाठशाला चाहिये किन्तु वह नियमित चले और आचार्य बालक उसमें अध्ययन करें तथा सहयोग प्रदान करें, यह प्रश्न है । साथ ही आचार्य बालकों के आचार की रक्षा का प्रयत्न करना भी उचित है । यहाँ मेरी दृष्टि से उनका चरित्र भी सुरक्षित रहना चाहिए । और नियंत्रणकर्ता, ऐसे वैष्णव नहीं जो हां में हाँ करते हों, तभी यह काम हो सकता है ।"

२७-७-१९८२ महामंत्री

अपनों का कपट धर्म को खा जायगा

"अब परिषद् का विचार करना हो तो आप विधिवत् करें । भगवान सब को सुबुद्धि प्रदान करें । अपनोका कपट ही स्वयं धर्म को खा जायगा ।

अनेक मत-भावनाएँ, सभी से सम्प्रदाय के स्वरुप की हानि ही होगी । सभी की यह मान्यता उचित नहीं है कि परिषद् मेरी है । न इस विषय में पत्र व्यवहार मुझसे होना चाहिये । शाखाओं और वैष्णवजनों को यह निर्देश भेजने का कष्ट करें । आपको कष्ट देना पड़ रहा है । यह भाग्य का दोष है जिसमें मेरे कर्म ही कारण भूत है ।

आज व्यवस्था की आवश्यकता है । सम्प्रदाय की स्थिति पर आज आँसू बहाने वाले भी क्रोकोडायल-टीयर्स वहाते हैं । 'भली यह खेलबे की बानि' ।"

महामंत्री

३१-८-१९८२ अ. रा. पु. वै. परिषद्

स्वयं निर्मित समिति शाखा नहीं

"मैंने आपकी एवा में पत्र भेजा था कि प्रचार की व्यवस्था मुझे करने की अनुमति दी जाय । शिष्टाचार का अभाव अनुशासनहीनता और अन्य बातें साधारण समझ से परे है ।

मैं इन लोगों से काम नहीं ले सकता और न अपना समय ही बरबाद कर सकता हूँ । संस्था के काम में स्वयं निर्मित समिति को हम शाखा नहीं कह सकते । आप इस विषय में विचार करके निर्देश भेजने का कष्ट करें । सेवा का यह अर्थ नहीं है ।"

महामंत्री

५ मई १९८२ अ. रा. पु. वै. परिषद्

कार्यकर्ता ही संस्था का बल है

''कार्यकर्ता की संस्था का बल है और उनकी अनन्य निष्ठा ही हमारे काम की सफलता है। यह एक हश्र है जिसे होना था । मैं अपने जीवन में अंतिम प्रयास करूँगा कि परिषद् सशक्त बने किन्तु मुझे दूर रखा जाय; न मेरा अधिक नाम हो । यह मेरी साधना है और यही संगठन का मूल है । बिना त्याग के साधना नहीं होती । सेवक इससे अधिक क्या कर सकता है । आज तक कुछ भी किया वह सभी सत्य-निष्ठा से किया है। परिषद् के लिए सभी आदरणीय है, किन्तु यह संस्था मेरी नहीं है और मेरेसे इस विषय में बात करना अनुचित है ।

मेरे काम में किसी की सहायता नहीं है और सभी मुझसे नाराज हैं अतः मेरे द्वारा संस्था की हानि होगी ।''

महामंत्री

अ. रा. पु. वै. परिषद्

३०-४-१९८२

सम्प्रदाय के विगठन को रोकना और सिद्धान्त ज्ञान

''परिषद् की समस्त शाखाओं को सूचित किया जाता है कि आपके क्षेत्र में पुष्टिमार्गीय मंदिर और वैष्णव जन कहां कितने रहते हैं और वहाँ स्वधर्म प्रचार एवं परिषद् के संगठन के कार्य द्वारा क्या किया जाना उचित है जिससे वैष्णव जनता एक दूसरे के समीप आपके और हमारे समाज में महाप्रभु श्री वल्लभाचार्य के सिद्धान्तों का प्रचार किस प्रकार वहाँ किया जा सकता है । इसीकी जानकारी केन्द्रीय प्रचार विभाग को देने का कष्ट करें । साथ ही समाज में विगठन होने का कारण क्या है और उसे हम कैसे दूर कर सकते हैं इसके विषय में भी उल्लेख करें । आप हमारी इस प्रचार प्रवृत्ति में क्या सहयोग दे सकते हैं । यह भी उल्लेख करने का कष्ट करें । यह निवेदन रुपया लेने के हेतु से नहीं किया जा रहा है । इसका उद्देश्य सम्प्रदाय के विगठन को रोकना एवं सिद्धान्तों का ज्ञान वैष्णव जनों को कराना है । जिससे उनकी धर्म विषयक जिज्ञासा पूर्ण हो सके ।

हमारी संस्था द्वारा हम किस क्षेत्र में क्या सेवा कर सकते हैं यह आपकी सूचना पर ही निर्णय किया जा सकता है आशा है हमारी संस्था को इस विषय में स्वधर्म सेवार्थ सहयोग प्रदान करने का श्रम करके अनुगृहीत करेंगे ।''

भ्रमणशील पत्र

अ. भा. पु. वै. परिषद्

समस्त शाखाओं के लिये

१९-४-१९८०

भगवान् का आश्रय लेकर महाप्रभु की सेवा करें

"आज यह विचारना आवश्यक है कि हम अपने धर्म की रक्षा किस प्रकार कर सकते हैं और हमारी मर्यादा तथा प्रतिष्ठा कैसे सुरक्षित रखी जा सकती है ।

धर्माचार्य परस्पर मत्सरग्रस्त हैं और उचित विवेक भी जब कुछ आचार्य बालकों के द्वारा छोड़ दिया है तब आपका क्या कर्तव्य है यह विचार करके हिम्मत से भगवान का आश्रय लेकर श्री महाप्रभु की सेवा करें ।"

महामंत्री

१३-७-८२ अ. रा. पु. वै. परिषद्

सम्प्रदाय को खतरा

"इन दिनों आचार्य बालकों के विचार रहन-सहन तथा विधि-विधान भिन्न हो रहे हैं और सेवा या आचार का ज्ञान न होने से स्वयं भी उसकी हँसी उड़ाकर वर्चस्व स्थापित करना चाहते हैं । इतना ही नहीं जीवन में पेंशन और अन्य बातें ऐसी आ गई हैं जिससे इनसे सम्प्रदाय को खतरा हो गया है ।

वेटीजियों में एक्स्ट्रा मॉडर्न का स्वरूप आ गया है जो सामान्य गृहस्थ महिला से भी आगे बढ़ा हुआ है । इससे समाज को इनके प्रति आदर की भावना ही नहीं रह जाती है । न ही इनके भरोसे सम्प्रदाय को छोड़ा जा सकता है ।

सम्प्रदाय में निष्ठा आचार्यों और इनके ही आचार पर है । आज इनका ही ठिकाना नहीं है । अतः यह प्रश्न गम्भीर है । परिषद् को इस विषय में पत्र व्यवहार द्वारा संयत भाषा में निवेदन करना चाहिए । अथवा आचार्य परम्परा पर कोई सिद्धान्त के अनुरूप व्यवस्था करनी चाहिए ।

आशा है आप सम्प्रदाय को इनके द्वारा होते हुए विनाश के गर्त से बचाने का प्रयास करेंगे ।"

महामंत्रीजी

१८-७-१९८२ अ. रा. पु. वैष्णव परिषद्

परिषद् की प्रतिष्ठा सम्प्रदाय की प्रतिष्ठा है

"आपके अंतर में भावना है किन्तु परिषद् और पी. पी. एस. का काम समय पर व्यवस्थित होता है । आपको जो भी कार्यक्रम रखना है आप कार्यलय द्वारा व्यवस्था कराने का कष्ट करें । साथ ही कोई भी आचार्य तत्काल बुलाने पर नहीं आयगा और यह उनका असम्मान है ।

हमको हमारे आचार्यों की परम्परागत गरिमा सुरक्षित रखनी है । हमारा सेवा विभाग भी जब कार्यशील था तब निश्चित समय पर काम होता था । और यहाँ के परम पैतृक वैष्णवों से हम काम नहीं लेते थे क्योंकि वो प्रपंच और भिड़ाने के अलावा कोई भी काम नहीं करते ।

काम का प्रश्न है वह कार्यकर्त्ता रख कर किया जा सकता है । सक्रिय सदस्य बनाये जावे । तथा समर्थ क सदस्य बनाये जावें, जिसको कार्य करना हो साप्रणाली निर्धारित की जावें । हमारा स्वयं सेवकदल अपना काम कर सकता है किन्तु उसकी एक प्रणाली है, जिसको हम अपने आप निर्धारित करते हैं ।

हम परिषद् में काम करते हैं किन्तु हमारा विभाग अलग है । आप भी जो कार्यक्रम रखें उसमें पहले से व्यवस्था करने का निर्देश देने का कष्ट करें ।

परिषद् की प्रतिष्ठा संप्रदाय की प्रतिष्ठा है और हम इसके लिए प्राण भी दे सकते हैं । हमारी दिखावटी निष्ठा नहीं है । और मेरे जीते जी यह सम्भव नहीं है कि यह संस्था समाप्त हो जाय । हमारे श्रम के द्वारा यह संस्था काम करती है । साथ ही क्षेत्रीय सम्मेलन भी व्यवस्थित होते हैं । हमने मालवा के कुछ क्षेत्र के लिए मोटरबाइक खरीद ली है । और कुछ धन-राशि भी जमा हुई है और बाकी हो जायगी ।

प्रचारक की नियुक्ति करना है । इस विषय में बात हो रही है । प्रत्येक रविवार को बम्बई के उपनगरों में सभा रखनी चाहिये । उसके पहले काम विभाजित करना उचित है । तभी यह व्यवस्था जमेगी । और यह सभा तभी संभव होगी जब सभी स्थानों पर अपने प्रतिनिधि रखने होंगे । एकाएक काम नहीं होगा । पी. पी. एस. पुरानी संस्था है और इसके कर्मी कार्यकर्त्ता तत्काल अपनी व्यवस्था कर सकते हैं ।

संगठन-शक्ति, त्याग और चरित्र की अपेक्षा रखती है ।

संस्था में लाखों रुपया लाया जा सकता है । हमारे सदस्य यह काम भली-भाँति कर सकते हैं । हम परम्परा का आदर करते हैं और आचार्यों को गरिमामय बनाना चाहते हैं । भाषा कुछ भी हो किन्तु मैं सभी को आचार्य मानता हूं और उन पर मेरी श्रद्धा है। वैष्णवों पर भी निष्ठा है किन्तु संस्था पर मेरी अनन्य निष्ठा है । और मैं इसी में सम्प्रदाय का हित और सेवा मानता हूँ ।

शास्त्रियों के प्रपंच मुझे पसंद नहीं है फिर भी सम्माननीय विद्वान के नाते मैं सभी का हृदय से आदर करता हूँ । मुझे गलत परम्पराओं और प्रपंच ने मुखर बना दिया है। किन्तु श्रद्धा तो कभी नहीं हटेगी ।

जीवन और यह देह सम्प्रदाय से बड़ी नहीं है । ऐसे उत्सर्ग करने वाले लोग हैं ।

आज यह संस्था स्वयं दृढ़ होगी तो अपने आप लोग काम देखकर खिंचते आवेंगे। आलोचना करने वालों की आवश्यकता नहीं है । काम करने वाले चाहिये । यहाँ की जनता मात्सर्य से पीड़ित है उसमें भगवद् भावना का उदय संभव नहीं है । सम्मेलन में अंतर शुद्ध होना चाहिये ।

श्री गिरिधरजी की वैठक कामर में है जिसका जीर्णोद्धार तथा स्वरूप की स्थापना करनी है और वहाँ से सम्प्रदाय का साधु समाज व्यवस्थित करना है । विष्णु स्वामी मत के साधु हमारा काम वहुत कर सकते हैं । मैं यह नहीं देख सकता कि सम्प्रदाय का ह्रास होता जाय । इसके लिए हम सभी प्रकार से सन्नद्ध है ।''

अध्यक्षजी, अ. रा. पु. वै. परिषद्

१७-५-१९८२

संस्था का महान् रूप देख कर ही कूच करें

"विशेष निमन्त्रण पत्र के उपरांत भी यह उचित है कि वैष्णव समुदाय और कार्यकर्ता अपनी संस्था की उन्नति और संगठन के बारे में स्वयं विचार करके समाज को संगठित करें । मेरे विचार से आज तक बिना गोस्वामियों के कुछ नहीं होने से ही यह समाज खंडित होकर पिछड़ गया है ।

इसका पूरा लाभ वैष्णवों को तभी मिलेगा जब वो अपनी संस्था के लिए जाग्रत होगें । मेरी वर्षों से यह साध रही है कि ऐसा कार्यकर्त्ता वर्ग तैयार हो । यह बात श्री मगनलाल शास्त्री के समय में थी और बाद में इस प्रथा को क्रमिक हानि आने लगी और आज सर्वथा समाप्त हो रही है । जब यह फिर से जाग्रत हो रही है तब आप इसमें हमारा अड़ंगा क्यों लगाते हैं । इस धर्म को अब तो पनपने दीजिए । आज तक इन आचार्यों ने इस संस्था को कुचल कर भी अपने धर्म की उन्नति की हो या आक्षेपों का जवाब दिया हो तथा जनता में आत्म विश्वास पैदा किया हो ऐसा दिखाई नहीं देता । स्वार्थ आता है तो संगठन की बात करते हैं और आप इनको प्रधान मानकर ही चलना चाहते हैं । यह निस्संदेह है कि हमको आचार्य की आवश्यकता हमेशा परम्परानुसार धर्म रक्षार्थ रहेगी किन्तु फिर भी क्या मिला है ।

भीतर कुछ और बाहर कुछ ऐसी इन गोस्वामी बालकों की नीति है । यह दोहरी चाल कब तक काम देगी । क्या यह आचार्य वंश के लिए अच्छी बात है ? मुझसे यह सहन नहीं होगा और मेरे कारण संस्था को इनका उपरी सहयोग भी नहीं मिलेगा । अतः आपको संस्था का हित देखना है । इसी में सम्प्रदाय का हित है और समाज का हित भी इसी में निहित है । नाम कमाने की लालसा में अलग-अलग काम करके सम्प्रदाय की प्रतिष्ठा चौपट करने वालों को कब तक सहन किया जायगा ? हृदय चीत्कार करता है । अब अधिक व्यथा सहने की मेरी सामर्थ्य नहीं है । शरीर का कष्ट हो तो और बात है । कितना कपट करें और सावधान रहें ? केवल इस संस्था और सम्प्रदाय को बचाने के लिए यहाँ अध्यक्षजी के विचार भी देखे और सुने । ऐसे ही अन्य धनिकों की भावना भी परखी है । अब गरीब समाज के लिए परिषद् क्या करती है यह सोचना चाहिये । आगाखान अपने (समुदाय) के लिए क्या कर रहा है यह देखिये । हमारे आचार्य क्या कर रहे हैं ?

आगाखान तो चरित्र को भी नहीं स्वीकार करता और अंग्रेज महिला से विवाह करके भी अपने समुदाय के लिए बहुत कुछ कर रहा है । यह समाज क्या करता है । कार्यकर्ताओं की बात करने की पद्धति परिषद् को पराई मानने जैसी है । परिषद् वाले क्या करते हैं ? यह पूछते है कि खुद ने तो कंठी पहनी नहीं है और शायद उनका धर्म भी अलग है । मैं तो यह हृदय से अनुरोध करता हूँ कि इस परम्परा को बदलना ही होगा। अब मेरे जैसे का कोई काम शेष नहीं है । कुछ भी करने में इन धर्माचार्यों की

बाधा और दुरंगी नीति से क्या सम्प्रदाय सुरक्षित रहेगा । मिथ्याचारी वैष्णव भी कम नहीं है । ऐसी स्थिति में नाम मात्र का यह जीवन कार्यकर्ताओं के द्वारा मिलता है तो इस संस्था को मिलने दीजिये । मैं यह चाहता हूँ कि हमेशा के लिए आंख बंद करने से पहले संस्था का महान रूप देखकर ही कूच करूं । यह सचाई से लिख रहा हूँ और प्रातःकाल ही लिखा है ।

आत्म-साधना और प्रभु-दर्शन का यह पथ नहीं है जैसा कि समझा जा रहा है । तनिक अनुभव करके देखने का कष्ट करें । संस्था को मन से चाहने वाले पैदा करिये । पर स्त्री की भांति मनोरंजन करने वालों की यहां गुंजायश नहीं है । आत्मा को कब तक धोका दूँगा ? श्री महाप्रभु और श्रीहरि ही जानते हैं और कौन जानेगा । किसी को क्या पड़ी है ।

जिस वासना के पीछे यह समाज और धर्माचार्य दौड़ रहे है उससे कभी शांति नहीं मिलेगी और न इसका कहीं अन्त है । यह तो इन्हीं के अन्त का कारण बनेगी ऐसा साफ दिखाई दे रहा है ।

बात कड़वी लगती है किन्तु सचाई छिप नहीं सकेगी । कब तक यह आँख मिचौली होगी । समाज में अनास्था और अनुत्तर-दायित्व साफ झलक रहा है । आशा है कि सभी परिस्थितियों पर विचार करके गम्भीरता से आगे बढ़ने का सुदृढ़ प्रयास करने का कष्ट करेंगे। सेवा भावना और आत्मप्रदर्शन में अंतर है । प्रदर्शन, शक्ति दिखाने का होता है और सेवा भक्ति सहित है । भक्तों ने निरर्थक शक्ति प्रदर्शन नहीं किया है । जब भी प्रभु के कार्य के लिए आवश्यकता पड़ी निरभिमान होकर शक्ति का प्रदर्शन करके लोगों को भक्ति पर आक्रमण करने से रोका है और भक्ति की सुरक्षा की है । सिद्धान्त और वार्ता-साहित्य से दोनों ही बातें स्पष्ट होती है । वर्तमान कुछ और है ।

भगवान करे ऐसे अनेकों सम्मेलन हों और उसकी पूर्ण सफलता सभी रुप से हो यही कामना है । आप सभी प्रयत्न कीजिये और सफलता तो प्रभुकृपा से सुनिश्चित है । सभी की भगवान सुनता है और सुनेगा यह मेरा आत्म विश्वास है । यह समय आ गया है । सच्चे कार्यकर्ताओं का निर्माण कीजिये । गरीबों में आत्मबल जगाकर उनको सम्प्रदाय की सेवा में लगाइए । राजनीति से जनमानस को बचाईये । यह प्राणनाशक प्रदूषण है। शेष भगवत्कृपा से परमानन्द है ।"

महामंत्री

अ. रा. पु. वै. परिषद्

२२-६-१६८२

प्रभु और महाप्रभु सभी का ध्यान रखते हैं

''ध्यान तो सभी का प्रभु और महाप्रभु ही रखते हैं फिर 'प्रौढापि दुहिता यव्दत् स्नेहान्न प्रेष्यते वरे तथा देहे न कर्तव्यम्' । इसका स्मरण करना उचित है । धर्म आज व्यवस्था चाहता है और यह संस्था के द्वारा संभव है । और संस्था त्याग एवं उत्सर्ग चाहती है ।

आप सभी मुझे सेवा में निवेदन का स्मरण करते हुए सर्वस्व समर्पण की प्रेरणा प्रदान करें । आज इसकी आवश्यकता है और प्राचीन समय में श्री वैष्णवों में ऐसी प्रेरणा ग्रहण की है तथा उसका दान किया है । श्रीहरि के हरि तभी तो उनको, 'कहा गया है' आपके पूज्य पितृचरणों का अंतिम जीवन यही था और मेरे श्री गुरुदेव एवं पितृपाद का यही आदेश था ।

मैं त्याग नहीं कर रहा हूँ । पर कर्तव्य या स्वार्थ है ।''

८ जुलाई १९८३ श्री कुमनदासजी झालानी

अब यादव स्थली ही शेष है

''इधर कुछ आचार्य बालक मेरे विरूद्ध षडयंत्र कर रहे हैं । इसकी चिंता नहीं है। इसकी शिकायत करनी है और वह उचित व्यवस्था के साथ करूंगा । समझ में नहीं आता कि सरलता से निवेदन करते हैं फिर भी अशिष्ट उत्तर मिलते हैं । इसमें कानूनी कार्यवाही क्या की जाय वह समझे बिना कैसे कुछ पूछ सकते हैं । 'परम स्वतंत्र न सिर पर केऊ की गति है ।'

वैष्णवों में भी विवेक नष्ट हो गया लगता है । अब यादव स्थली ही शेष है । असभ्य भाषा और फिर बिना समझे लिखना । आधुनिक बालक आगे चलकर ऐसी प्रेरणा करते हैं । कानूनी कार्यवाही करें तब भी धर्म संकट है क्योंकि क्रिमनल में आचार्य ही फसेंगे । धर्म संकट खड़ा करते हैं। संगठन की बात दूर की है । हमको क्या करना चाहिए यह समझ में नहीं आता है ।

विट्ठलनगर में सात स्वरुपों के मित्र ही नहीं स्टेचू वर्षों से वाहर लगाये गये हैं और उन पर रोक नहीं है । स्वरूप आचार्य द्वारा पुष्ट व स्थापित करने तक की बात थी किन्तु अव मनमानी करते हैं । और इसमें दोष हमारे समाज का है ।

भद्दे स्तर पर उतर आते हैं । विवेक सिखाने जावें तो गालियों की बौछार और चरित्र पर झूठे आक्षेप । आपकी जानकारी के लिए लिखा है । इसको परिषद् की फाइल में सुरक्षित रखावें ।''

महामंत्रीजी

७अप्रिल १९८३ अ. रा. पु वै. परिषद्

सम्प्रदाय फूंककर तमाशा नहीं देखना चाहता

"यह संस्था सभी की है और अब मेरे द्वारा अधिक कार्य भार सम्हालना संभव नहीं है । अतः मैं संस्था से अलग हो जाऊँ यही उचित है । सम्प्रदाय के आचार्य अनुशासित नहीं है । इसमें जो परिवर्तन अपेक्षित है वो हो नहीं हो रहे हैं और न हीं वैष्णव समाज को इस दिशा में सोचने का समय है । ऐसी अवस्था में मेरा संस्था की सेवा से मुक्त हो जाना ही श्रेयस्कर है । घर फूंककर तो मैंने तमाशा देखा, किन्तु सम्प्रदाय फूंककर तमाशा देखना नहीं चाहता ।"

श्री कुमनदास जी झालानी, महामंत्री

अ. रा. पु. वै. परिषद्

१ फरवरी १६८४

व्यक्ति की अपेक्षा सम्प्रदाय का विचार करें

"आपने अध्यक्षजी को भेजे पत्र की प्रति प्राप्त हुई । मैंने इतना ही कहा था कि हमको आचार्यों के जीवन को उठाने में सहायक होना चाहिए और उनमें कोई दूषण न आवें । इसकी सावधानी रखते हुए श्री चरणों में जनमत निवेदन करना चाहिए । आज ऐसा होता है कि विना झारी, भोग एवं चरणस्पर्श किये आचार्य वंशज खान-पान कर लेते हैं । भावना का स्तर गिरता जा रहा है और आचार्यों के जीवन को खराब करता है । काँदा, लहसुन से लेकर मादक द्रव्य जो वर्जित है - उनका भी सेवन कर रहे हैं और उसको रोकने की बात कहता हूं तो यह मेरा अपना कर्तव्य है इसमें दूषित बात नहीं है न ऐसा दुर्भाग्य से कहता हूँ फिर भी श्रीजी को पधराना यह ऐसा ही प्रसंग है जिस पर तत्काल विचार करना भी सम्भव नहीं था न प्रणालिका के अनुसार होता । यह तरीका ही नहीं है। रुपयों के जोर से मनोरथ की बात कहना कितने अंश तक उचित है जबकि किसी के पैसे पर हमारी दृष्टि नहीं रहती । मनोरथ तो सौभाग्य की बात है फिर भी परम्परा और व्यवहार एवं स्थिति का विचार तो करना ही पड़ता है ।

मैने आज तक निषिद्ध वस्तु का सेवन नहीं किया । मेरा कर्तव्य में समझकर पालन करने का प्रयास करता हूँ उस पर भी श्रद्धा करता हूँ फिर भी अनुचित व्यवहार करना आश्चर्यकारक है ।

साथ ही वेद और यज्ञ के विषय में ही आस्था नहीं है तब क्या बातें करनी । किस कार्यक्रम को कहाँ करना यह भी सोचना पड़ता है । परिषद् का लाभ भी देखना है और प्रभाव के विषय में व्यक्ति की अपेक्षा सम्प्रदाय का विचार करना है । शायद उन्होंने अर्थार्थि ही देखे हैं । साथ ही इस दिशा में भी परिषद् को विचार करके निवेदन की विधि सोचनी पड़ेगी, नहीं तो समाज का भयंकर पतन होगा और इससे सम्प्रदाय कलंकित होगा। सच कहना अपराध है । यह सहज लिखा है ।''

श्री महामंत्रीजी
अ. रा. पु. वै. परिषद्
१ मार्च १९८३

परिषद् सम्प्रदाय की है

''परिषद् में काम करना अपने अस्तित्व को बेचना नहीं है । परिषद् सम्प्रदाय की है । मैं ही परिषद् नहीं हूं ।

परिषद् की हत्या और मेरी इज्ज़त की हत्या करने का ही यह प्रयास है । आचार्य भक्ति का यह नाटक जीवन में भावना के माध्यम से प्रथम ही देखा है । क्या कभी हम किसी संस्था के अध्यक्ष या मंत्री को एक सदस्य या कार्यकर्ता के नाते यह भी नहीं कह सकता कि यहाँ काम ठीक नहीं हो रहा है और उसे सुधारना चाहिए । क्या यह मेरी बात का सही उत्तर है या पूर्व नियोजित योजना है जिसमें ऐसे अवसर की प्रतीक्षा की जा रही है कि कब हम दोष देकर अलग हों । यदि ऐसा करता तो मैं आज तक बहुत से ऐसे काम करके दोष देकर अलग हो सकता था । किन्तु संस्था के प्रति और मेरे धर्म के प्रति मेरा आग्रह और कर्तव्य है । सभी की वैष्णवता और शालीनता देखी है और देखता रहूंगा। किन्तु यह सब ठीक बात नहीं है । परिषद् से हटने वालों को यही कारण मिलता है । यह मेरे ही चरित्र की हत्या का प्रयास है क्या करें ! भगवान की इच्छा है ।''

श्री महामंत्रीजी
अ. रा. पु. वै. परिषद्
११-२-१९८४

समाज अपने स्वार्थ को सर्वोपरि मानता है

"आपको इस पत्र द्वारा सूचित करता हूं कि मेरा अब स्वास्थ्य भी ठीक नहीं है। वैष्णव समाज भी कुछ और ही है। अधिक श्रम भी हृदय की अस्वस्थ्यता के हेतु हो नहीं सकता। यह समाज अपने स्वार्थ को सर्वोपरि मानता है।

स्वधर्म बहाना है। मुझे आत्म निर्णय लेना है। शेष जीवन में अपनी ही व्यवस्था कर सकूं तो यह सौभाग्य होगा। मेरे श्री ठाकुरजी को श्रम है। न द्रव्य कमाने की बुद्धि आई और न प्रभु को सुख दे सका। वैसे मेरा कोई पद नहीं है किन्तु आज तक परिषद् की जानकारी और कार्य करने से यह औपचारिक सूचना ही प्रस्तुत करता हूं।

कार्यकारिणी समिति में मेरी यह सूचना सभी को निवेदित कर दें। सभी को भगवद्स्मरण करें। मेरे पारिवारिक स्वजन भी मुझसे रुष्ट है। अतः क्षमा चाहता हूँ। उनका कहना सत्य है। आज तक मैं कुछ नहीं कर सका। परिणाम भी कुछ नहीं है। आप सभी सानन्द रहे।"

महामंत्री जी

२५-८-८४

आपसी मेल और सहनशीलता से ही कार्य संभव

"आपस के मेल से तथा सहनशीलता से ही काम हो सकता है। श्री महाप्रभु का उपदेश 'त्रिदुःख सहनं धैर्यम्' पढ़ा तो जाता है किन्तु आचार में उसका असर नहीं है।"

श्री कुमनदासजी झालानी

१७-१२-१९८५

परिषद्-कार्य में वैष्णव भावना आवश्यक

"सभी अपना कार्य अपना समझ कर संभालें तभी हम संप्रदाय की सेवा कर सकते हैं। इसमें वैष्णव भावना आवश्यक है। जहाँ तक मन में वैष्णवता के वीज नहीं आयेंगे तव तक परिषद् का कार्य होना संभव नहीं है।

इस संस्था की मन से आवश्यकता का अनुभव करना चाहिए तभी हमारी सफलता हो सकती है। जो काम करना है वह हम मिलते ही कर सकते हैं। यह भावना पर निर्भर करता है। सर्वथा और त्याग एवं धैर्य से हम विवेक के द्वारा भक्ति की साधना करें तो उज्ज्वल व्यवहार करने वाले और चतुर बन सकते हैं।

यह मन की कुंठा परिषद् के कार्यकर्ताओं को मिटा लेनी चाहिए। मुझे खेद है कि मेरी भावना और साधना को कोई समझने में सक्षम न हो सका। इसका कारण अत्यन्त व्यवहारज्ञ होना मात्र है।"

१८-१२-१९८५

श्री कुमनदास जी झालानी

सम्प्रदाय की रक्षा का सही मार्ग अपनाया

"झगड़ने पर संगठन और सम्प्रदाय की हानि ही होगी । छोटी-छोटी बातों से अपके मन में क्लेश विकार उत्पन्न नहीं करने चाहिए, आपस में बैठकर समझ लेना चाहिए । आप सभी समझदार हैं किन्तु मेरा मत यह है कि सही अर्थ में वैष्णव बनना बहुत जरूरी है। जब तक वैष्णवता का जीवन में विकास नहीं होगा तब तक परिषद् और सम्प्रदाय की सेवा के साथ आत्म-कल्याण भी नहीं हो सकता ।

सेवा का आनन्द और जीवन का आनन्द लेना है तो अलौकिक भावना से विचार करने का अभ्यास करें । स्वभाव पर विजय पाना तभी संभव है जब कि मन निरहंकार हो । ऐसा सभी कार्यकर्ता बनने का प्रयास करें यही मेरा अनुरोध है । मेरा जीवन तो थोड़ा है किन्तु एक समय आप सभी याद करेंगे चाहे भाव या दुर्भाव से कि मैंने सम्प्रदाय की रक्षा का सही मार्ग अपनाया था जिस पर हम सभी एक अंग के रूप में चलकर कृतकृत्य हो सकते थे । श्री महाप्रभु के द्वारा सभी को प्रकाश और सुबुद्धि मिले यही प्रार्थना है । शेष भगवत्कृपा ।"

श्री मुकुन्द भाई शाह, बम्बई

१८-१२-१९८५

श्रीहरि - श्री गुरु से देह-संबंध नहीं आत्मसंबंध है

"आचार्यों को परिषद् की ओर से निवेदन पत्र लिखने की प्रणाली आपको भेज रहे हैं। उसी प्रकार सबको प्रार्थना करने का व्यवहार परम्परागत अपनायें जिससे मर्यादा सुरक्षित रहेगी और वैष्णव समाज कुंमकुंम पत्रिका के स्थान पर ऐसे निवेदन करके उनसे आज्ञा प्राप्त करेगा । यही प्रणाली है । श्रीहरि, श्री गुरु को अपने लौकिक समाचार देने का विधान नहीं है । वहाँ आत्म संबंध है । देह संबंध नहीं होता । यह जानकारी के लिए लिखा है । परिषद् को परम्परा का निर्वाह करके धर्म का प्रचार और स्थिति उज्ज्वल करनी चाहिए ।"

श्री कुमनदासजी झालानी

महामंत्रीजी अ. रा. पु. वै. परिषद्

४ अप्रिल १९८६

परिषद् का कार्य समाज और धर्म दोनों का ही काम है

"समाज और धर्म-कार्य दो अलग न समझें । परोपकार यह पुण्य है और परि-पीड़न यह पाप है -- ऐसा श्री वेद व्यास ने कहा है । धर्म और समाज को अलग करने की क्रिश्चियन नीति को हमें बढ़ावा नहीं देना चाहिए तभी भारतीय संस्कृति की रक्षा होगी। शिष्य की हर प्रकार से रक्षा करना यह गुरु के लिए आनंद की बात होती है ।

परिषद् का कार्य समाज और धर्म दोनों का ही काम है ।"

८ अगस्त १९८६ डॉ. विनोदजी दीक्षित, गोवर्धन

"परिषद् में अब आचार्यों एवं असंतुष्टजनों द्वारा तोड़-फोड़ की राजनीति चलाई जा रही है ।"

श्री कुमनदास झालानी

२८-६-१९८६

परिषद् सशक्त कैसे बनेगी

"जैसी स्थिति, विचारों की अस्थिरता और आचार्यों तथा तथाकथित वैष्णवों के आक्रमण से यह सम्प्रदाय ही तिरोहित होने जा रहा है । हमें हुकूमत चाहिये या अपनी मनमानी करनी है । संस्था का हित नहीं सोचना है । परिषद् समिति बनाकर इस पर विचार करके सदस्य रखने चाहिए ।

वर्तमान प्रपंच सर्वनाश का कारण बनेगा । परिषद् को लोग हृदय से नहीं चाहते। हम एक समिति बुलाकर विचार करें, यह आवश्यक है ।

संगठन साधन ही नहीं, साध्य एवं साधक भी होना चाहिए । मेरा नाम न रखने पर आपके पत्र को लाभ होगा । श्री श्याम मनोहरजी विराजमान हैं ही । परामर्श और मार्गदर्शन के लिए एक व्यक्ति हमारे बीच हो यह आवश्यक है । उसका दृष्टिकोण समन्वय कारक होना चाहिए । ग्रंथानुवाद में तो सरल लेखों से यह योग दे सकता हूं और इस पत्र को प्रसिद्ध बनाना है तो पूरी व्यवस्था करनी होगी । प्रकाशन में भक्ति वर्धिनी में पूरा साहित्य और मोटर को बदलकर दूसरी एक लाख दस हजार में ले लेनी चाहिए । वैदिक साहित्य का समन्वय पुष्टिमार्ग से वता कर प्रचार करना है । उपनिषदों की टीका, भाष्यानुवाद, निवन्ध का सरल अनुवाद, सेवा प्रणाली सभी घरों की, आरती और छठी के चित्र तथा अन्य सामग्री भी आगे सम्मिलित करनी चाहिए ।

परिषद् को सशक्त वनाने के लिए व्यवस्था को ठीक करना होगा । स्वयंसेवकदल, संस्कार शिविर, कार्यकर्त्ता, प्रशिक्षण शिविर, आदि सभी के लिए व्यवस्थित कार्यकर्ता दल

तैयार करावें । प्रथम पीठ तथा अन्य प्रकार से कार्य करूंगा । परिषद् को लाभ ही होगा। गोरक्षा का काम भी रचनात्मक रूप से करना होगा ।

आगे बढ़ना है तब सम्प्रदाय के माध्यम से जनकार्यों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। ग्रामीण वैष्णव समाज में जाग्रति लानी उचित है । प्रचारकों के लिए समुचित व्यवस्था करनी उचित है । वेदवर्धिनी गाड़ी चलाने से वेद के प्रचार-प्रसार के साथ श्री वल्लभाचार्य का हित होगा । उनका जो भी सिद्धान्त है उनको उज्ज्वल रूप में रखा जायगा। मनमानी करने पर तो यह कार्य नहीं होगा । पुष्टि भक्ति सुधा, वेणुनाद, वैष्णव धर्म पताका आदि मासिकों से तथा श्री पारीख द्वारकादासजी के साहित्य से उत्तम प्रकाशन की सामग्री मिलेगी । मेरे पास सचित्र भागवत है उसको चित्रित करके सुबोधिनी आदि का आधार तथा गायत्री भाग्य की टीका का अनुवाद करके छापना ठीक है । यह अनुवाद वेद-वर्धिनी में भी काम आएगा । फिर उपनिषद और वेदों पर लेखन संप्रदायनुसार तथा वेदानुसार दोनों ही उत्तम रहेगें । यह वेद वर्धिनी के द्वारा होना चाहिए । भक्ति वर्धिनी सम्प्रदाय का प्रचार साहित्य बांटे । भारत की हर प्रांत की भाषा में उसका सरल, मधुर अनुवाद होकर प्रांतीय प्रचारक को दिया जाना चाहिए । कलकत्ता, उड़ीसा, आसाम, दक्षिण में यह काम हो सकता है । बम्बई के लिये मराठी प्रकाशन करें । इन सभी को सहायता न्यास से फंड एकत्र करके दी जावे । या प्रांतीय शाखा सम्भाले । इससे उनके पास कार्य भी रहेगा और योग्य व्यक्तियों का परिचय मिलेगा ।''

श्री कुमनदासजी झालानी

२ अेप्रिल १९८६ — महामंत्री, अ. रा. पु. वै. परिषद्

दृढ़ आस्था और पूर्ण आत्म विश्वास से सभी मनोरथ पूर्ण

''मैंने आपको अपना समझकर सम्प्रदाय की सेवा का कार्य परिषद् द्वारा किया जाने का संकेत भी सब समझ कर किया है । भगवान अक्लिष्ठकर्मा हैं। आप इसको मन में सर्व प्रकार से दृढ़ कर लें तो आत्मबल भी बढ़ेगा । सेवा कार्य में यह आवश्यक है साथ ही आश्रय भी पक्का होना चाहिये ।

आपमें जिस समय आस्था दृढ़ हो जायगी और आत्म विश्वास पूर्ण हो जायगा तभी आपके सभी मनोरथ पूर्ण हो जायेंगे यह बात आप स्मरण रखिये ।

ब्रज का धर्म ब्रज देश में ही स्थिरता प्राप्त करेगा । ''मधुर ब्रज देश, वस मधुर कीनो ।'' मधुर गिरिधरन आदि सप्ततन वेणुनाद सप्तरंध्रन, सरस रूप लीनो ।''

धर्मेनास्ति क्वचिद्भयम् सर्वम् श्रीमदाचार्यचरणानाम् कृपातः भविष्यत्येवेति निश्चियः।''

२७-२-८७ — डॉ. विनोदजी दीक्षित, गोवर्धन

स्वधर्म एवं परिषद् की रक्षा अवश्य करें

"दु:ख की बात है कि मेरे इस जीवन काल में परिषद् सशक्त नहीं हुई । न इसके प्रति वैष्णव जनों में अपेक्षित आत्मीयता उत्पन्न हुई है । सम्प्रदाय में बिखराव के साथ भयानक स्थिति आ गई है । श्री महाप्रभु एवं प्रभु ही संभालेंगे ।

इष्ट जनों को संगठित होकर सेवा करने की प्रेरणा देवें ।

पुनश्चः स्वधर्म एवं परिषद् की रक्षा अवश्य करें ।"

डॉ. विनोदजी दीक्षित, गोवर्धन

११-२-८७

सम्प्रदाय को बचाना, हो तो परिषद् को बचाना होगा

"वस्तुतः यह एक कटु तथ्य है कि मैं अपने जिम्मेदार पद का दायित्व निभाने में असमर्थ रहा । किसी पर दोषारोपण करना मेरे धर्म के विरूद्ध है । ऐसा लिखा अवश्य है जो कि स्थिति का चित्रण मात्र है किसी के प्रति भावना में विकार नहीं आया । सम्प्रदाय की स्थिति भयंकरता की ओर जा रही है । और हम सिद्धान्तों का मनन करके उन्हें जीवन में स्थान नहीं दे पाये । निरर्थक विवाद एवं असहिष्णुता के कारण दूषित विचारों की भंवर में फंस गए हैं । अब जो मोड़ आएगा वह बड़ा ही भीषण होगा ।

परिषद् में एक आदर्श स्थापन नहीं हो सका । कर्मठ निष्ठावान् कार्यकर्त्ताओं में स्वधर्म के प्रति दृढ़निष्ठा का अभाव, उनके मनोबल की कमी सभी इसमें कारण भूत हैं । समर्पण में बहुत ही त्याग और सहृदयता की आवश्यकता है क्योंकि यह धर्म सबसे कठिन है और सरल भी है । यही विरूद्ध धर्माश्रयी स्वरूप है जो कि विरोधों और विरोधाभासों से बचा सकता है फिर भी दुराग्राह की जड़ें बहुत गहरी हैं जिसे छोड़ना हर एक के लिए संभव नहीं है । प्रभु कृपा से मैं तो स्वरूप ही हूँ । हाँ लोक का असर कभी आश्रय की कमी से हो जाता है जिन्हें फंसना है वो दल-दल में फसेंगे उनको रोका नहीं जा सकता । हम अपनी कमी के कारण कुछ नहीं कर पायें तो किस को दोष दें । अपना ही दोष विचारता हूँ ।

अब तटस्थ चिंतन में आनन्द है । सम्प्रदाय को बचाना हो तो परिषद् को ही बचाना होगा और स्वयं को क्षमाशील, दुराग्रह रहित, निर्वैर बनाने का प्रयास करना होगा । समय पर किया गया कार्य और सेवा ही सार्थक होती है ।"

श्री कुमनदासजी झालानी

१२-५-८७

परिषद् सेवा भावना से कार्य करें और सम्प्रदाय को बचाले

"सभी आचार्यों की मर्जी पर संस्था नहीं चल सकती । व्यक्तिगत मान्यता सम्प्रदाय के हित में संभव है या नहीं और कितनी ठीक हो सकती है तथा उन पर कितना अमल किया जा सकता है वह सब स्थिति को देखकर निर्णय करना होता है । अतः सभी बातों में सिद्धान्तों की दुहाई नहीं दी जा सकती । आज से पहले जो क्रम शुरु हुवा था वह सद्भावना पर था । आज वातावरण गुरुशिष्यों का बदल चुका है, दृष्टिकोणों में भी अंतर है । गुरुजनों ने भी अपनी गरिमा की और ध्यान नहीं दिया न सम्प्रदाय से ही व्यवस्था हुई । ऐसी अनेक बातें है जिनको समझना चाहिए । अतः अपने विचारों को दवा कर मेरे नाम पर संस्था को आघात लगाऊं और सही बातों को न रख सकूं, यह मेरी प्रकृति के विपरीत है ।

न किसी को यह कहने का समय देना चाहता हूँ कि परिषद् मेरी है । न यह संस्था मेरी थी, न है, न रहेगी और रहनी भी नहीं चाहिए । यह सम्प्रदाय को बचालें और सेवा भावना से संगठन करलें इतना ही बहुत है । अपने आपको भी बचा सका तब बहुत होगा।"

श्री अध्यक्षजी तथा कार्यालय मंत्री

१०-७-१९८७

धर्म को अनुयायियों द्वारा ही समाप्त किया जा रहा है

"मुझे खेद के साथ सूचित करना पड़ता है कि धर्म के लिए कार्य करने में समय का अभाव होता है । आचार्यों के विगठन की आढ़ में इस संप्रदाय को भंयकर आघात लगे हैं । प्रत्येक तीन मास में तो कार्यकारिणी की सभा होनी ही चाहिए तथा परिषद् के स्थायी कोष को बढ़ाने की चिंता भी नहीं है ।

मेरे जीवन में कड़वे अनुभव हुए हैं । इस धर्म को इसके अनुयायियों द्वारा ही समाप्त किया जा रहा है । यह बात इतिहास में बेमिसाल रहेगी । आगर में मेरे शिष्य हरिजन हैं तथा मोडीगांव में है । अभी तक पिछड़ी हुई जातियों का महत्व इस धर्म के बड़ों ने नहीं समझा । जब कि यह अकिंचन एवं निस्साधन भक्ति मार्ग है और इसके प्रभु सर्वोद्धारक है । हरिजनों के लिए छात्रावास की भी उपेक्षा की गई है । मेरे विचार से अब इस धर्म को ग्रहण ही लगा है । सतत् प्रवास करने वाले हैं ही नहीं । अफसर शाही चलती है । अस्तु । मेरा कर्तव्य निभा रहा हूँ। हमको इस दिशा में कार्य करना है । परिषद् के द्वारा या अलग होकर भी यह कार्य करना ही पड़ेगा । अंतिम श्वांस तक संघर्ष तो करना है । आप मुझसे कोटा में मिलें तथा मेरे पास एक भील कार्यकर्ता का प्रबंध

करें तथा एक व्यक्ति, हरिजनों के लिए कार्य करने वाला चाहिए । हमें दलित शब्द पर आपत्ति करनी चाहिए । यह धर्म का अपमान है । क्योंकि भक्ति मार्ग अकिंचनों का है।

अभी तक हम लोग न तो अर्थ ही संग्रह करना जानते हैं न त्यागी ही मिलते हैं । इस समस्याओं को हम अनाथाश्रमों से सुलझा सकते हैं । झाबुआ में अर्जी दे दें यदि अध्ययन न दे । वृथा समय खोनो से काम नहीं होगा ।

समस्याओं का समाधान पहले से नहीं सोचा जाता और समय आने पर कुंआ खोदने की नीति है उसमें भी स्थायित्व नहीं है । देखें प्रभु की क्या इच्छा है । श्री महाप्रभु आशीर्वाद प्रदान करें कि हम समर्थ हों ।''

श्रीयुत् बाबा सीतारामदासजी वैरागी

३ अगस्त १९८८

सम्प्रदाय आज बहुत ही भयानक स्थिति में

''हमें प्रयास करने होंगे । मैंने प्रभु से यही प्रार्थना की है कि वो संस्था के लिए परिषद् को समर्थ बनायें । कार्यकर्ता की अपेक्षा है ।

खेद का विषय है कि धर्माचार्य अपना निजीमत चलाने के लिए सम्प्रदाय के व्यवस्थित स्वरूप को बिगाड़ रहे हैं ।

वेद्वर्धिनी के रुपया बिना काम मेरे पास जमा कराये हैं जिन्हें परिषद् को ही सम्भालना चाहिए । मेरा कार्य द्रव्य संभालना नहीं है ।

म्लेच्छ देश जाना होगा अमेरिका और लंदन की यात्रा भी दुर्भाग्य से करनी होगी। फिर भी परिषद या सम्प्रदाय वहाँ पनपे तो प्रायश्चित हो जायगा अन्यथा जीवन पर्यन्त खेद रहेगा । प्रभु ही जाने क्या इच्छा है । यह संप्रदाय आज बहुत ही भयानक स्थिति में फंसा है । महाप्रभु रक्षा करें और सभी सेवक स्वधर्म समझें ।''

डॉ. विनोदजी दीक्षित

२२ जुलाई १९८८

सम्प्रदाय स्थिर हो, परिषद् शक्तिशाली सेवक बने

"परिषद् की सभा का पत्र मिला । मेरा स्वास्थ्य अब गिरता जा रहा है । आघात लगते हैं। जिस प्रकार से परिषद् की रूप रेखा चल रही है वह विचारणीय है । नाथद्वारा के विषय में यथार्थ जानकारी भी वैष्णव समाज को देनी चाहिए । सम्प्रदाय पर सुनियोजित एवं व्यवस्थित आक्रमण हो रहे हैं इस दिशा में यदि उचित समझें तो विचार करें ।

मैं क्या कह सकता हूं जा तो साधनहीन हूं किन्तु आश्रय हीन तो नहीं हूँ । न मेरी श्रद्धा हीन है । फिर भी विवश हूँ । कमी मेरी ही है ।

मुझे विलायत जाकर मन में ग्लानि बैठ गई है तथा प्रायश्चित करने पर भी मन में अपवित्रता ही लगती है । अस्तु ! सम्प्रदाय की स्थिति शोचनीय है और यह परिषद् या वैष्णव विचारें तो ठीक है । मेरे विचार से जतीपुरा में अपना केन्द्र बनाना आवश्यक है। वृन्दावन तो और ही स्थल है किन्तु जतीपुरा के महत्व से अपनी रक्षा होगी । जमीन भी है । बिना अधिकार के भी कभी सम्प्रदाय एवं परिषद् की रक्षा के लिए अधिकार का प्रयोग करके आश्वासन देता हूँ । किन्तु श्री महाप्रभु से प्रार्थना करता हूं कि जीवन और शक्ति दें कि मैं सम्प्रदाय को स्थिर करके परिषद् को शक्तिशाली सेवक के रूप में निवेदित कर जाऊं ।"

श्री कुमनदासजी झालानी

१४ नवम्बर १९८८

सम्प्रदाय के अस्तित्व का जटिल प्रश्न सामने है

'मतभेद तो क्या, मन भेद हो जाने पर मिटाना कठिन होता है ऐसा होना सरल है। परिषद् तो क्या आज तो सम्प्रदाय के अस्तित्व का ही जटिल प्रश्न सामने है । हम लोगों की उपादेयता स्वधर्म के लिए नहीं रही अतः अब चिंता की बात क्या है । समर्पण को स्वार्थ ने घेर लिया है ।

स्वास्थ्य का क्या विचार करें ? एकान्त में भी एकान्त नहीं रहता । फिर भी आपके सुझाव पर विचार करूँगा और प्रयास करूंगा कि स्वस्थ रहूँ आगे तो प्रभु इच्छा ही बलवान है ।

इतिहास बनता विगड़ता रहता है । किन्तु हम अपना इतिहास उज्ज्वल नहीं छोड़ जावेंगे । भगवान तो सभी का हित करता है । हम समझ नहीं पाते । मेरी तो बहुत सी कमियाँ है । "कृपा एक लालन जू की चहिये । अपनो दोष विचार सखीरी उनसों कुछ न कहियें ।" इस पद का चिंतन एवं मनन करता हूं श्रवण किया था मन में सुन्दर लगा।

हमारी गति दिशाहीन होती जा रही है । बस इतना ही दिखाई देता है । कारण भी हमी है ।"

श्री कुमनदास झालानी

२१-३-८८

हरिजनों को वैष्णव बनाने के कार्य की महत्ता

"आपको मेरे पत्रों से श्रम तो होगा किन्तु कर्तव्य के कारण सूचना करना भी अनिवार्य है । ब्रज प्रदेश में वन तता उपवनों की रक्षा और उनकी सुन्दरता तीर्थ की दृष्टि से सुरक्षित रखी जानी चाहिए । इस विषय में राज्य सरकार को पत्र एवं ज्ञापन परिषद् द्वारा दिया जाना चाहिए । प्रदेश समिति तथा मथुरा एवं जतीपुरा आदि की शाखा मिलकर यह कार्य करें तथा मुख्यमंत्रीजी से शिष्ट मंडल मिलकर अनुरोध करें, यह आवश्यक है । ग्रामपंचों के एवं ग्रामवासियों के हस्ताक्षर लेकर ज्ञापन दिया जावे तथा यात्रा के अवसर पर यात्रियों के हस्ताक्षर लेकर एक आवेदन पत्र भेजें। इससे शाखायें सक्रिय होंगी तथा ब्रज प्रदेश में यात्रिकर है हीं उसका उपयोग होगा ।

श्री यमुना के प्रदूषण को रोकने के लिए तो कार्यवाही करने का निर्देश दिया है तथा यात्री के लिए सभी स्थानों पर पड़ाव क्षेत्र उपलब्ध कराने के लिए भी हम ज्ञापन दे सकते हैं । इससे सभी ब्रज का सहयोग प्राप्त होगा ।

पू. पा. श्री ब्रजरायजी महाराज का आदेश पत्र अवलोकनार्थ प्रेषित है । इसी पत्र के साथ हरिजनों की वाल्मिकी सेना का एक गुप्त परिपत्र की प्रति आपको भेज रहा हूं । जिस पर विचार करें तो झाबुआ तथा आगर में हरिजनों को वैष्णव बनाने के कार्य की महत्ता आपको समझने में कठिनाई नहीं होगी । नाथद्वारा में निषेध करके ठीक नहीं किया जा रहा है । समय को पहचान कर कार्य करने से ही धर्म रक्षा होगी ।

श्री गुसांई जी ने अकबर आदि को दर्शन कराये थे ।"

श्रीमान अध्यक्षजी, अ. रा. पु. वे. परिषद्
८-८-१९८८ केन्द्रीय कार्यालय बम्बई

परिषद् अपनी नीतियों पर दृढ़ रहकर सम्प्रदाय की सुरक्षा करें

"परिषद् का कोई भी कार्यकर्ता केन्द्र का हो या कहीं का, त्रुटि होने पर हम सभी का दायित्व आता है । किसी व्यक्ति विशेष की आलोचना का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता और जो हम लोग आलोचना से उत्तेजित हुए तो संगठन का कार्य किस प्रकार कर सकेंगे । जहाँ तक परिषद् में कार्यकर्त्ता की नीति का प्रश्न है वे केन्द्र का विषय है और न इसमें मैंने हस्तक्षेप किया है और न हस्तक्षेप करने का विचार है । परिषद् अपनी नीतियों पर दृढ़ रह कर सम्प्रदाय की सुरक्षा करे । यह मैं सदस्य और आचार्य के नाते कामना करता हूँ । यह सभी को समझ कर चलना है कि परिषद् मैं नहीं, सम्प्रदाय है ।

परिषद् राजनैतिक संस्था नहीं है, धार्मिक है । जिस धर्म से हम सभी जुड़े हुए है अतः प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म के बारे में सोचना चाहिये । यह हमारा सबका दायित्व है कि हम निरन्तर अपने धर्म के प्रति कर्तव्य का चिंतन करते रहें ।"

(१) श्री कुमनदास झालानी, इन्दौर

(२) सेठ इन्द्रकान्त भाई, अहमदाबाद

(३) डॉ. गजाननजी शर्मा, जोबट

(४) प्रांतीय मंत्री, गुजरात राज्य

जोधपुर - १५-६-८६

विनाश का बीज हम ही पनपा रहे हैं

"परिषद् और संप्रदाय का ही पूरा अस्तित्व खतरे में है । इस समाज में अब प्रयास करना निरर्थक है । एकांगी दिशा में देखकर चलना और संगठन में जैसा वातावरण बन रहा है उससे यह स्पष्ट समझा जा सकता है । परिषद् के कार्यालय, कार्यकर्त्ता आदि को व्यवस्थित करें ।

परम वैष्णव और आचार्य बालकों की कृपा से अब अन्य भविष्य बनता जा रहा है। क्षमा करें । हमारे विनाश का बीज हम ही पनपा रहे हैं । सभी सदस्यों से मिलकर विचार करें । जिसमें आजीवन सदस्य आदि की सलाह भी ली जानी चाहिए ।

व्यक्तिगत स्वार्थ, साधन की गंगा में स्वनाम-धन्य बनने की उत्कट कामना से संप्रदाय अपनी परिपूर्णता के निकट आ गया है । संगठन का प्रयास भी सफल इसी से नहीं होगा। अतः संस्था को ही संभाले । सभी को मन से समझना चाहिए - दिखावा अलग है । सलाह लेने से अपने बिराने सभी सामने आ जायेंगे । निष्कपट सेवा तो कहीं भी, कभी भी की जा सकती है ।"

श्री कुमनदास झालानी

२ अप्रैल १९८६

परिषद्-कार्य समाज और धर्म दोनों का

समाज और धर्म कार्य दो अलग न समझें परोपकार यह पुण्य है और परपीड़न यह पाप है ऐसा श्री वेदव्यास ने कहा है फिर धर्म और समाज के कार्य को अलग करने की क्रिश्चियन नीति को हमें बढ़ावा नहीं देना चाहिए तभी भारतीय संस्कृति की रक्षा होगी परिषद् का कार्य समाज और धर्म दोनों का ही काम है ।

दिनांक ८-८-१९८६ डॉ. विनोदजी, कोटा (राजस्थान)

सम्प्रदाय में बिखराव की स्थिति

परिषद् संबंधी बात परिषद् के द्वारा निर्णीत होनी चाहिये । यह मेरी सम्मति है, किन्तु निर्णय कार्यकारिणी में होता है । दुःख की बात है कि मेरे इस जीवन काल में परिषद् सशक्त नहीं हुई । न इसके प्रति वैष्णवजनों में अपेक्षित आत्मीयता उत्पन्न हुई है। सम्प्रदाय में बिखराव के साथ भयानक स्थिति आ गई है । श्री महाप्रभु एवं श्री प्रभु ही संभालेंगे ।

दिनांक १२-२-१९८७ (कलकत्ता) डॉ. विनोदजी दीक्षित

आस्था एवं आत्मविश्वास से मनोरथ पूर्ण

मेरा कार्य तो श्रीहरि अपने स्वरुप वल से स्वयं करते आये हैं और मुझे एक अपने बच्चे की भाँति वड़ा किया । प्रत्येक विषम स्थिति एवं कष्ट से अपने श्रीहस्त से बचाया है इसके मुझे पूरा प्रत्यक्ष अनुभव है । जिसने भी जो कुछ किया उसका प्रतिकार भी भगवान ने किया है । जो मैंने देखा तथा अनुभव भी किया और कर रहा हूँ ।

भगवान् अक्लिष्टकर्मा है आप इसको मन में सर्व प्रकार से दृढ़ कर लें तो आत्मबल भी वढ़ेगा । सेवा कार्य में यह आवश्यक है, साथ ही आश्रय भी पक्का होना चाहिये । आपमें जिस समय आस्था दृढ़ हो जायेगी और आत्मविश्वास पूर्ण हो जायेगा तभी आपके सभी मनोरथ पूर्ण होने लग जावेंगे । यह बात आप स्मरण रखिये ।

औषधालय एवं गोकुल गोशाला आनन्द से चल सकते हैं । उत्तर प्रदेश में पूर्ण प्रचार भी संभव है । ब्रज का धर्म ब्रज देश में ही स्थिरता प्राप्त करेगा ।

मधुर ब्रज देश, वस मधुर कीजो । मधुर गिरधरन आदि सतजन वेणुनाद सप्तरंध्रन, सरस रूप लीनो । धर्मेनास्ति क्वचिद भयम् । सर्वम् श्रीमदाचार्य चरणानाम् कृपानः भविष्यत्येवेतिं निश्तयः ।

दिनांक २७-२-८७ (डॉ. विनोदजी)

सभी अपना राग अलापते हैं

दिनांक १६-५-१६८८

श्री महाप्रभुजी की कृपा से ही यह सम्प्रदाय एवं यह परिषद् की संस्था बचेंगे, अभी तो अव्यवस्था ही देख रहा हूं । हमारे पास न तो प्रचारक है, न कार्यकर्ता । साहित्य की कमी भी है । केन्द्र आनन्द में है । व्यवस्था तो सभीकी प्रभु करते हैं अतः इस पर क्या सोचें । दुःख की बात है कि केन्द्र में भी अभी तक पर्याप्त साधनों की व्यवस्था के विषय में नहीं सोचा जा रहा है । धनराशि भी एकत्र करने की योजना नहीं है । बस पद एवं घोषणा और हम जैसे लोगों का डिंडिमनाद है ।

हम तो निष्क्रिय हैं । प्रभु, आचार्य का वालक समझकर कृपा करें तो कुछ सामर्थ्य आएगी । राजस्थान में प्रचार की ओर ध्यान दें । जयपुर भी उठ नहीं सका । सभी अपना राग आलापते हैं । यही कमी सम्प्रदाय को तिरोहित कर देगी । श्री वल्लभाचार्य कृपा करें, यही प्रार्थना है ।

(डॉ. विनोदजी)

हरिजन नीचे नहीं हैं

दिनांक ६ नवम्बर १६८८

नाथद्वारा के विषय में भ्रामक प्रचार जानबूझकर किया जा रहा है । अपने मंदिरो में मुसलमान तक आए हैं और दर्शन किए तथा करते हैं। हरिजन उनसे नीचे नहीं है, न उनके जाने पर कोई रोक है । यह राजनैतिक षड़यंत्र मात्र है ।

मैंने दीक्षा दी है उसमें अंग्रेज, जुइश, मलखान आदि सभी है उनको दीक्षा देना भक्तिमार्गीय परम्परा है और प्रमाण भी है। आप वार्ता साहित्य का अध्ययन करें निज वार्ता घरुवार्ता, चौरासी वैष्णव वन की वार्ता तथा दो सौ वावन वैष्णवन की वार्ता और बैठक चरित्र भी महाप्रभु के देखने से आपको इतिहास का ज्ञान होगा तथा भक्तिमार्ग में किस प्रकार वेश्या आदि को स्वीकार किया है यह वात आप समझकर अधिक श्रद्धा सम्पन्न हो सकेंगे ।

माम् हि पार्थ व्यस्पाश्रित्य येऽपिस्यु पापयोनयः ।

स्त्रियोशूद्रा स्ता वैश्या स्तेपि यान्ति परां गतिम् ।। यह गीता का ६/३२ प्रमाण तथा किरात हूणान्ध्र पुलिन्द पुल्कसा साभीर कंका पवनाः रवसादयः । मेऽन्ये च पापा यदुपाश्रया शुद्ध्यन्ति तस्मै प्रभ विष्णवे नमः ।। यह भागवत का प्रमाण इसके लिए पर्याप्त है । भागवत् को श्री वल्लभाचार्य प्रमाण रूप से स्वीकार करते हैं और गीता को तो प्रमाण सभी मानते हैं । ताजवीवी, अलीखान, रसखानजी, धोंधी कलावन्त, मेहाधीमर, मोहना

भंगी (चूहडा) पीरजादी आदि मुसलमान तथा अन्य जाति के भक्त हुए हैं ताज के तथा पीरजादी के ठाकुर जीभी हैं और सेवा भी उन्होंने घर पर की है । उज्जैन के श्री मदनमोहनजी ताज की पुत्री लक्खो के ठाकुरजी हैं जिसका विवाह मिर्जाओं से हुआ था और मिर्जावाड़ी अपने मंदिर के पीछे ही है ।

अग्निवेश को अपना नाम कमाना है तथा जिनेवा जाना है इसलिए यह उपद्रव है। जिसका कारण संलग्न पत्र से ज्ञात होगा कि क्यों नाथद्वारा में पुलिस का लाठीचार्ज हुआ था । उदयपुर शाखा का पत्र आपको देखने पर पता चलेगा । मेरा आपसे अनुरोध है कि सम्प्रदाय का साहित्य एवं भावना ग्रन्थ अवश्य देख लें । अकबर तानसेन आदि भी दर्शन कर गये और जो अपना इतिहास है, उसमें तानसेनजी भी कण्ठी लेकर वैष्णव हुए अकबर ने भी तिलक लगाया था और उसका चित्र भी दिल्ली के लाल किला में पहले लगा था तथा जहाँगीर आर्टगेलरी मे मैंने देखा था जिसमें बंडी की तरह का जामा पहले माथे पर तिलक था । अतः इस साहित्य का तथा उन मुसलमानों के कीर्तन तथा पदों का अवलोकन करें ।

डॉ. विनोदजी दीक्षित

(कलकत्ता का पत्र महाराजश्री का)

प्रान्तीयता और मंडलवाद सम्प्रदाय के लिए घातक

आपको इस पत्र के साथ एक वाल्मीकि सेना के गुप्त पत्र की प्रति भेज रहा हूँ । इसको पढ़ कर आप समझ सकेंगे कि भारतीय समाज को किस प्रकार छिन्न-भिन्न करने का प्रयास किया जा रहा है ।

अतः आप परिषद् की ओर से पिछड़े समाज में भी कार्य आरंभ करें, यह मेरा अनुरोध है । आप मेरी बात समझ सकते हैं - - - - अतः आप प्रान्तीय स्तर पर इस समाज में वैष्णवता का प्रचार करें ।

झाबुआ में भी भीलों को वैष्णव वनाया है । यह कार्य सिद्धान्त के विरुद्ध नहीं है और भविष्य को देखते हुए पिछड़े समाज को पतन की दिशा से रोकने का कार्य धर्म द्वारा ही होना चाहिए क्योंकि राजनीति इस विषय में उपयुक्त नहीं है ।

- - - परिषद् का उत्थान आपके द्वारा हो रहा है विशेष कर विदेशों में कार्य करने की भूमिका का भी निर्माण करें श्री खख्खर को सूचना दें कि लन्दन में कार्यकर्ताओं का पत्रादि से निर्माण करें ।

अभि संगठन की भावना प्रवल नहीं हुई है । प्रान्तीयता और मंडलवाद संप्रदाय के लिए घातक सिद्ध हो रहे हैं । श्रीकृष्ण के लिए अनुचित शब्द स्टेट्समेन ने लिखे हैं । इसका विरोध कराना आवश्यक है । हरिजन और मुसलमान आदि का सम्प्रदाय में कभी

बहिष्कार नहीं किया गया है । उनको उन्नत बनाने का प्रयास भक्तिमार्ग ने हमेशा किया है । यही दृष्टिकोण आप भी अपनायें और पिछड़े समाज में वैष्णवता तथा आचार के संस्कार डालने का पूर्ण प्रयास करें । नाथद्वारा में हरिजनों को नहीं जाने देना ठीक नहीं है ।

पुष्टिमार्ग द्वारा यह कार्य पहले ही किया जाना था । तब मेरा विरोध किया गया। जब यह बात कही गयी । अब आगे तो हरि इच्छा है । आपको उचित लगे तो मेरे विचारों को स्वीकार कर उनको वैष्णव बनाने का कार्य करें । अष्टाक्षर दीक्षा देना शास्त्र सम्मत है ।

- - - - धर्म प्रचार वाहन का नाम भक्ति-वर्धिनी रखना उचित है । मोबाइल चिकित्सा वाहन का नाम जब भी रखें तो श्रीकृष्णाश्रय रखने का कष्ट करें ।

श्री चिमनभाई शेठ

८ अगस्त १९८८

परिषद् कार्य में बिखराव से खिन्नता

जो स्थिति इस समय परिषद् की हो रही है और जैसा परिषद् के कार्य में बिखराव आ रहा है उसे देखते हुए मन खिन्न होता है । जहाँ मुझे परिषद् के कार्य में बुलाया जाय वहाँ मेरे सम्मान व मेरी गरिमा के अनुकूल ही बुलाना चाहिये ।

मैंने जो भी कार्य परिषद् में किया वह एक कार्यकर्त्ता के नाते संनिष्ठा से किया । उस समय मैंने अपने पद की गरिमा का चिन्तन नहीं किया । किन्तु आपने अपने आपको सामान्य कार्यकर्ता मानकर परिषद् के विशृंखल कार्यों को जोड़ने का प्रयास किया और संस्था की मूलभूत कमियों का लाभ लेकर लोग संस्था को तोड़ नहीं दें इसलिए इसे बचाने हेतु कुछ वैधानिक नियमों की भी उपेक्षा करनी पड़ी । क्योंकि परिषद् में उस समय सुसंगठित कार्य प्रणाली नहीं थी और हम लोग भी संस्था के प्रति संपूर्ण आस्थावान नहीं थे। फिर भी प्रचार विभाग के अध्यक्ष के नाते मुझे आचार्य, वैष्णव, पंडितगण सभी की गरिमा और गौरव को बचाना था। जिससे परिषद् के पदाधिकारियों की छवि धूमिल न हो ।

मुझे आशा है कि आप परिषद् की समुचित व्यवस्था करने के लिये सचेष्ट होंगे और इसकी विधिवत् कार्यप्रणाली बनाने का प्रयास करेंगे ।

(अन्तर्राष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् के अध्यक्ष, कार्याध्यक्ष और महामंत्री को संवोधित)

सम्प्रदाय के विकृत वातावरण से चिन्ता

आपके उदार विचारों को देखकर हृदय में प्रसन्नता होती है । परन्तु आपको यह सूचित करना अपना कर्तव्य समझता हूँ कि परिषद् की शाखाओं का गठन मेरी आज्ञा से हो यह उचित नहीं । ये मेरे दृढ़ विचार हैं । क्योंकि ऐसा होने पर संस्था में सूत्रता नहीं रहेंगी और भयंकर विघटन हो जायेगा आपने मेरी आज्ञा को मान्य समझकर मेरा जो सम्मान किया है उसके लिये मैं आपका अभिनन्दन करता हूं । परंतु हमको विधिवत् दूसरी शाखा का गठन फिर भी करना होगा । इसे तदर्थ समिति से अधिक मान्यता नहीं मिलनी चाहिये । नहीं तो जिला ग्राम और सभी स्तर पर असंगठन हो जायेगा । और हमारे माननीय अधिकारों का भी कोई मूल्य नहीं रहेगा । मैं कहीं भी जाता हूं तो परिषद् के संगठन का उल्लेख मात्र करके इस संगठन में सम्मिलित होने की वैष्णवों को प्रेरणा देता हूं । न कि मनमानी कार्य करने की छूट देता हूं । क्योंकि यह मेरे अधिकार क्षेत्र के बाहर की बात है । भविष्य में इस प्रकार के कार्य न हों यह मेरी आकांक्षा है । जिस प्रकार सम्प्रदाय का वातावरण विकृत हो रहा है उसकी मुझे गंभीर चिन्ता है । भगवान श्री महाप्रभु आपके कार्य में सम्पूर्ण सफलता प्रदान करें यह मेरी प्रार्थना है ।

(हँसमुख भाई खख्खर), राजकोट

हरिजन कार्यकर्ता हों

बम्बई - ३०-११-१९८१

आपके पत्र में यह उल्लेख नहीं है कि हरिजन छात्र को काम दिया कि नहीं । यह बात स्मरणीय है और यह आवश्यक भी है ।

इसका महत्व चरित्र निर्माण में अधिक है । इस विषय में आपने उदासीनता का क्यों सेवन किया यह समझ में नहीं आता ।

यह पत्र इसी हेतु से लिख रहा हूं कि आप इस पर ध्यान देने का कष्ट करें । इस विषय में हरिजनों को आकर्षण पैदा करना आवश्यक है ।

श्रीमान् गोपालसिंह जी पुरोहित

भव्यता प्रदर्शन की आवश्यकता नहीं

बम्बई - ०१-०४-८२

- - - - किसी भी प्रकार से हमें काम करना है तो आत्म विश्वास और स्पष्ट व्यवहार होना आवश्यक है । आज यह समझ कर ही काम करना होगा कि प्रत्येक व्यक्ति अपने ढंग से काम करेगा । हमारे कार्यकर्ताओं को मिलने में भव्यता के प्रदर्शन की आवश्यकता नहीं है ।

- - - - मेरे कार्य-क्षेत्र का दायित्व मुझ पर है, अतः आप समझकर सूचना देंगे तभी आगे का विचार होगा ।

श्री गोपालसिंहजी पुरोहित एवं तिवारीजी को

योजनाएँ स्वावलम्बी हों

कलकत्ता, २१ जुलाई १९८१

- - - - हमें प्रत्येक योजना को इस प्रकार चलाना है कि वह स्वावलम्बी हो, तभी हम परिषद् के कार्य की उन्नति कर सकते हैं । साथ ही यह भी स्मरण रखने का कष्ट करें कि उत्तर न आने पर फिर स्मरण दिलाते रहने से कार्यकर्ताओं को अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं होगी ।

- - - - मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि आप जैसे जागरुक, कर्मठ महानुभाव हमें प्राप्त हैं ।

श्री सीतारामदासजी बैरागी, झाबुआ को

नवीन साधनों और नवीनतम पद्धति से शिक्षा

दोहद, २४-११-१९८१

हमें जो बाल मन्दिर चलाना है वह अंग्रेजी माध्यम से हिन्दी के साथ चलाना है, जिससे आगे हम कार्यकर्ताओं को काम दिला सकें और भेंज सकें । इसमें अच्छी अध्यापिकाएं स्नेह से व्यवहार करने वाली हों तभी यह काम बन सकता है । - - - - - हमें नवीनतम साधनों से नवीनतम पद्धति के अनुसार भारतीय शिक्षा देनी है । साथ ही धर्मकथाओं से धर्मबोध भी देना है ।

श्री स्वामी सीतारामदासजी को

विलग लोगों को मिलना है

बंबई, दिनांक २ अप्रैल १९८२

मेरे विचार से मार्ग दर्शन मंडल परिषद् के माध्यम से काम करे यही उचित है । क्योंकि समाज का विखराव न हो यह देखना भी आवश्यक है ।

समस्या आज यही है कि हमको खोये हुए या विलग लोगों को अपने में मिलाना है किन्तु अलग से अनेक मंचों की रचना करके हमारी शक्ति क्षीण नहीं हो यह भी देखना है ।

इस काम के लिए कार्यालय और समय दोनों ही देने को जो तैयार हों ऐसे महानुभावों को कार्य देना चाहिये क्योंकि हमारा संपर्क कार्यालय दृढ़ होना चाहिये ।

संगठन में अनुशासन पैदा कीजिये अन्यथा यह टूट जायगा ।

(श्रीयुत शास्त्रीजी को)

वैधानिक नियमों का पालन हो

बम्बई, १३-४-१६८२

सभा में निर्णय होकर ही काम करने की विधि है । यह संभव नहीं है कि वैधानिक नियमों का उल्लंघन किया जाय । आपने कहाँ कहाँ बालवाड़ी खोली है और क्या काम हुआ है इसकी सूचना देने का कष्ट करें जिससे बुलेटिन में प्रकाशित करें तथा अध्यक्ष को भी विवरण प्रस्तुत करें ।

श्रीमान् बाबा सीतारामदासजी बैरागी

परिषद् कार्य राजनीति प्रेरित नहीं

बंबई - ३१-१०-८२

अभी तक लोगों ने त्याग नहीं सीखा है आज तक धर्म से लाभ लेना ही जाना है और इसी के लिए धर्म का आचरण किया है जब देने का समय आया तो पीछे हटना स्वाभाविक है इसीलिए महाप्रभु ने इस बात को स्वीकार नहीं किया ।

परिषद् का काम किसी भी राजनीति से प्रेरित नहीं है और शुद्ध धर्म के काम में तात्कालिक लाभ नहीं होने पर व्यवधान आता है ।

हमको कार्यकर्ता उत्पन्न करने हैं और उनमें त्याग जरूरी है । इसलिए ऐसा केडर तैयार करने का कष्ट करें भगवान के आश्रय से कोई काम अधूरा नहीं रखा। संस्था को स्वावलम्बी करना है ।

बाबा सीतारामदासजी बैरागी को - - -

हिन्दुत्व को रुपया खा गया

बंबई - ३ जनवरी १६८३

- - - - अकेला हूँ और काम अधिक है । समर्पित जीवन नहीं है । हिन्दुत्व को रुपया खा गया, भावना बिक रही है, धर्म बिक रहा है । हम लोग त्याग पर जीवित हैं। प्रतिष्ठा इसी में है कि हम मकान लेकर आगे काम करें। महिला प्रशिक्षण के लिए भी हमको जाग्रत होना है ।

पैसे ने मनुष्य को दिल और दिमाग रहित बना दिया है । रुपया लाने के पीछे वह सब कुछ कर सकता है ।

आपके साथ कार्यकर्त्ता अच्छा हो और आपको अपना व्यक्तित्व ही इस काम में आगे बढ़कर काम करेगा । वहाँ के साधुओं को अपने साथ करें, यहाँ गौरक्षा के लिए सत्याग्रह की योजना में व्यस्त हूं । दूसरा कत्लखाना दिल्ली में खुलने जा रहा है । गौवंश की रक्षा का प्रश्न आज किसी को भी दिल में दया नही लाती । मांस खाकर लोग धर्म कर्म को भी चाट गए । भगवान् से प्रार्थना करिये कि गौवंश और धर्म को बचावें ।

सीतारामदासजी बैरागी

कार्यकारी अध्यक्ष ग्रामीण एवं अरण्य सेवा संस्थान झाबुआ को

कृष्णधाम का काम प्रारंभ करें

बंबई

३ मार्च १६८३

हमको मकान की पूरी चेष्टा करनी है और इसका काम जल्दी करने पर हमारी साख हो जायगी ।

एक काम हो तो दूसरा श्री कृष्णधाम का काम प्रारंभ करें ।

बाबा सीतारामदासजी को

भीलीभाषा में साहित्य हो

कलकत्ता, १४-५-१६८८

विद्यालय का कार्य यथाशीघ्र पूरा होना चाहिये। सुना है कि चम्पारण्य में भी आदिवासियों के लिए श्री वल्लभा बाबा सूरत वाले कार्य करने को उत्सुक हैं अच्छी वात है किन्तु कार्यकर्ता नहीं है । हमको दूसरी कार्यकर्ताओं की पंक्ति प्रस्तुत करनी होगी जो हमारे वाद झाबुआ को संभाल सके तथा रिक्त स्थान न रहे ।

कार्यकर्ता परिषद् के प्रति निष्ठावान् होने चाहिए । आपके समय पर समाचार मिलने पर आनन्द होता है और प्रेरणा भी मिलती है कि मैं भी ऐसे सक्रिय हो सकता तो कितना अच्छा होता फिर भी बहुत ही सन्तोष है ।

वल्लभाचार्य का साहित्य भी हमें भीली भाषा में क्रमशः छपाना है । वार्ता साहित्य तथा शिक्षा पत्र के साथ ही स्तोत्र अर्थ सहित प्रकाशित कराने हैं । संभव हो तो एक परिवार की पत्रिका भीली भाषा में निकालें तो सभी समुदाय को क्रमशः एक पेज कभी-कभी दे सकेंगे ।

भीलों को जागरूक करना है और उनका भारतीय संस्कृति के प्रति जो त्याग रहा है उसकी महत्ता उनको समझानी है। परिषद् का भी प्रचार हो और डॉक्टर साहब कोई और इस विषय में संस्कार शिविर भीलों के लिए ही लगावें तो उनको महाप्रभु की गरिमा और शक्ति का ज्ञान हो सकेगा ।

प्रगति के पथ में प्रभु आप को प्रतिफल सफल करे, यही कामना है । केन्द्रीय मंत्री एवं अध्यक्ष को भी मेरे जैसी रिपोर्ट भिजवाते रहें ।

सीतारामदासजी बैरागी को

भीलों में साहित्य प्रचार हो

कलकत्ता - १० जून १६८८

मध्य प्रदेश समिति क्या कार्य कर रही है ? यह मैं नहीं जानता किन्तु भीलों में वार्ता साहित्य, शिक्षापत्र एवं अन्य साहित्य का प्रचार होना आवश्यक है । श्री वल्लभाचार्य का एक मंदिर हो वहाँ उनको एकत्र करने की योजना बनावें। केन्द्र तथा प्रदेश की बात करना निरर्थक है हमें एक वैष्णव बेल्ट तैयार करना है, यह आशा है ।

मैं नहीं जानता कि जीवन कितना है प्रभु के आधार पर ही सब करता हूँ । आपको ही लिख सकता हूँ आप कार्य शुरु करावें । रेडटेपिम में विलम्ब तो लगता ही है । भाग्य की बात है ।

फिर भी सभी सहन करना है - यही सेवा है । सेवा धर्म तो परम गहन है और योगियों को भी अगम्य है । प्रभु के बल से ही काम होगा । मन तो करता है कि निवृत्ति ग्रहण करें ।

हमें कार्य परिषद् के माध्यम से ही करना है ।

सीतारामदासजी बैरागी को

हिन्दू वर्ग - विद्वेष छोड़े

कलकत्ता ३ अगस्त १६८८

आपको स्टेटमेन की प्रति भेज रहा हूँ जिसमें भीलों को भी हरिजनों के साथ उकसाने का प्रयत्न किया गया है साथ ही प्रसाद में नशीले पदार्थ दिए जाते हैं आदि का भी आक्षेप किया गया था जिसका उत्तर दिया है ।

आगर में हरिजन शिष्य हैं तथा उनसे सम्पर्क करके इसका प्रतिवाद कराना है । साथ ही वैष्णव के भीलों को अपना धर्म समझाना है जिससे वो हमारे धर्म से बर्हिमुख न हों । अन्नकूट में तो चावलों का ढेर होने से मंदिर धोया जाता है किन्तु उसका किस रूप में चित्रण किया गया है ।

हमें किस प्रकार विरोध करना है इसका गंभीरता से विचार करना है । साथ ही हमारे कार्य में प्रगति करनी है । हिन्दू शब्द का उच्चारण करते हैं तब लोगों को राजनीति दिखाई देती है किन्तु आज इस धर्म को और गोरक्षा को यदि कोई टिकायेगा तो हिन्दू मानस ही टिका सकता है । अस्तु । हिन्दू जनता में परस्पर संघर्ष कराने के लिए यह उपाय किया जा रहा है जवकि वल्लभ संप्रदाय में सभी शिष्य हुए हैं । आप वार्ता साहित्य का अध्ययन करें तथा उसका प्रचार वैष्णव भीलों में कराना आवश्यक है । भीली भाषा के साहित्य के लिए क्या व्यय होगा यह विवरण तैयार कर लें । छोटी पुस्तक एवं श्री वल्लभाचार्य का जीवन चरित्र तथा शिक्षा पत्र के साथ उनको संस्कृत का अपना सम्प्रदाय

का साहित्य पढ़ाने का कार्य किसी को देना उचित होगा । परिषद् का कार्य भी दूरदर्शितापूर्ण नहीं है । नाथद्वारा में इतना भी नहीं हो सका कि परिषद् को साहित्य प्रकाशन तथा भील आदि में प्रचार के लिए सहायता दें तभी तो ऐसे आक्षेप होते हैं जब कि क्रिश्चियन इस प्रकार प्रचार करके धर्म बढ़ाते हैं । अस्तु मन की व्यथा कह रहा हूं ।

हमारे धर्म में राजनेता, राजनैतिक हस्तक्षेप बन्द करें इस भावना को जाग्रत करना है । हमें भील तथा हरिजन कार्यकर्ता तैयार करना है इसका लक्ष्य बनायें ।

आश्चर्य है कि धर्म पर आक्षेप हो रहे हैं और हम सभी अपने काम में व्यस्त है, यही बात बता रही है कि धर्म का एक दिखावा मात्र शेष है । आशा है आप मेरा संदेश आगर तथा इन्दौर पहुंचा देंगे । तथा बासवाड़ा, डूंगरपुर आदि स्थानों से पारेखजी से मिलकर राजस्थान सरकार तक तथा केन्द्रीय सरकार तक विरोध पहुंचाने का प्रयास करेंगे। स्टेट्समेन को भी प्रतिवाद भिजवाने का प्रयास करना चाहिये । हिन्दुओं! वर्ग विद्वेष की नीति का त्याग करना ही ठीक है । अन्य पक्ष वैष्णव परिषद् विचारें । एक श्री वल्लभाचार्य मंदिर का निर्माण होना भी अब आवश्यक है ।

सीतारामदासजी बाबा को

मन में वैष्णव धर्म किसी के नहीं है

कलकत्ता

१० अप्रेल १९८९

आप जिस व्यक्ति को बंबई लाये थे उसको मेरे पास पुनः रखने से वह सम्प्रदाय का आचार एवं परम्परा का ज्ञान प्राप्त कर लेगा तो आपको सुविधा होगी ।

द्वारका सम्मेलन के पूर्व आप बंबई आवें तथा जिस व्यक्ति को लाये थे उसे ला सकें तो लाने का कष्ट करें जिससे भविष्य में श्री वल्लभाचार्य मंदिर में चित्र सेवा कर सकेगा ।

मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है कि हमारा सम्प्रदाय समाप्ति की ओर अग्रसर हो रहा है । मन में वैष्णव धर्म किसी के नहीं है ।

सीतारामदासजी वैरागी को.

विशेष :

कुछ पत्र जो गुजराती में थे उन्हें हिन्दी लिपि में लिखे गये परंतु बाद में विशेष प्रयासों से गुजराती प्रकाशन संभव हो सका। अतः वे मूल गुजराती पत्र जो हिन्दी लिपि में लिखे गये हैं गुजराती विभाग में मुद्रित हैं।